

Weather Report
अधिकतम तापमान: 32.0°C
न्यूनतम तापमान: 21.0°C
हवा गति: 11 कि./घं.
जयपुर सूर्योदय समय
सुबह: 6.06

संजीवनी टुडे

समय के साथ बढ़ता अखबार

अब होगी सुविधाओं की बात
संजीवनी टुडे के साथ
जम्हाइर, वैश्विक वर्ल्डविंग एवं
निर्भूत बर्बाद संदेश
मात्र 1100/-
साप्ताहिक 8X9 cm
संजीवनी टुडे
संजीवनी टुडे का पता: जयपुर, राजस्थान
e-mail: sanjeevnitoday@gmail.com

हरियाणा में भाजपा की पहली लिस्ट जारी, 67 नाम

सीएम लाडवा से लड़ेंगे, राम रहीम को 6 बार पेट्रोल-फरलो देने वाले पूर्व जेलर को भी टिकट

संजीवनी टुडे

चंडीगढ़। हरियाणा में भाजपा ने बुधवार, 4 सितंबर को 67 उम्मीदवारों की पहली लिस्ट जारी की। इनमें 8 मंत्रियों को दोबारा टिकट मिला है। 25 नए चेहरे हैं। 8 विधायकों का टिकट काटा गया है। लिस्ट में 8 महिलाएं हैं। सीएम नायब सैनी करनल को जगह कुरुक्षेत्र की लाडवा सीट से चुनाव लड़ेंगे। अनिल विज को अंबाला कैंट से ही टिकट दिया गया है। हरियाणा की सभी 90 सीटों पर एक फ्रेज में 5 अक्टूबर को मतदान होगा। रिजल्ट 8 अक्टूबर को आएगा। 2019 में हुए विधानसभा चुनाव के बाद भाजपा और जननायक जनता पार्टी के गठबंधन ने राज्य में सरकार बनाई थी। अपने कार्यकाल में बलात्कार और हत्या के दोषी गुरमीत राम रहीम को 6 बार पेट्रोल या फरलो देने वाले पूर्व जेलर सुनील सांगवान को टिकट मिला है। भाजपा में शामिल हुए जेजेपी के विधायक देवेन्द्र बबली, राज कुमार गौतम और अनुप धानक को भी टिकट मिला है। तीन दिन पहले भाजपा में शामिल हुई अंबाला की मेयर शक्ति रानी शर्मा को कालका से उम्मीदवार बनाया गया है। रतिया सीट से पूर्व सांसद सुनीता दुग्गल को टिकट दिया गया है। लोकसभा चुनाव में सिरसा से उनका टिकट काट दिया गया था। भारतीय कबड्डी टीम के पूर्व कप्तान दीपक हुड्डा को महम सीट टिकट मिला है। 5 नेताओं के परिवार को भी टिकट मिला है।



पहली लिस्ट में 25 नए चेहरे

भाजपा की लिस्ट में 25 नए चेहरे हैं। शाहबाद से सुभाष कलसानी नए चेहरे हैं। इन्हें एबीवीपी कोटे से टिकट दिया गया है। पिहोवा से पूर्व मंत्री सदीप सिंह का टिकट काट कर पहली बार सरदार कमलजीत सिंह अजरना को चुनाव मैदान में उतारा गया है। करनल विधानसभा सीट से जगमोहन आनंद को पहली बार टिकट मिला है। समालखा से मोहन भड़ाना, खरखोदा (अजा) से पवन खरखोदा, सोनीपत से निखिल मदान, रतिया से सुनीता दुग्गल, कालावली (अजा) से राजिंदर देसुजोधा, रानिया से शीशपाल कंबोज, नलवा से रणधीर सिंह पहिहार को उम्मीदवार बनाया गया है। बाढ़ड़ा से उमेश पासुवास, तोशाम से श्रुति चौधरी, दादरी से सुनील सांगवान, बवानी खेड़ा कपूर वाल्मीकि, महम से दीपक हुड्डा, गद्दी सापला किलोई से मंजू हुड्डा, कलानौर से रेनु डाबला, बहादुरगढ़ से दिनेश कौशिक, झुज्जर कप्तान बिधाना, बेरी से संजय कबलाना, अटली से आरती राव, कोसली से अनिल उडिना, गुध्राम से मुकेश शर्मा, पवलवल से गौरव गौतम को पहली बार बीजेपी ने टिकट दिया है।

सिरसा सीट कांडा के लिए छोड़ने के संकेत

भाजपा ने पहली लिस्ट में सिरसा सीट पर उम्मीदवार का ऐलान नहीं किया। सिरसा से हरियाणा लोकहित पार्टी (हलोपा) के गोपाल कांडा 2019 में जीते थे। इस समय हलोपा गव्ह का हिस्सा है। हरियाणा के सीएम नायब सिंह सेनी कह चुके हैं कि विधानसभा चुनाव कांडा के साथ मिलकर लड़ा जा सकता है। भाजपा ने पहली लिस्ट में मुस्लिम बाहुल्य नूंह जिले की तीनों विधानसभा सीटों पर भी टिकट होल्ड कर लिए हैं। 2019 में यहां की तीनों सीटों पर कांग्रेस जीती थी। जुलाई 2023 में हुई हिंसा के बाद नूंह जिले में भाजपा को लेकर लोगों में खासी नाराजगी है। लोकसभा चुनाव में भी यहाँ की तीनों सीटों पर कांग्रेस को बढ़त मिली थी। राज्य में 2 टर्म से भाजपा की सरकार चल रही है। साल 2014 में हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा ने पूर्ण बहुमत हासिल कर सरकार बनाई थी। तब मनोहर लाल खट्टर को मुख्यमंत्री बनाया गया। इसके बाद 2019 में हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा बहुमत से चूक गई। भाजपा ने 10 सीट जीतने वाली जननायक जनता पार्टी (खज्ज) के साथ गठबंधन की सरकार बनाई। तब मनोहर लाल खट्टर मुख्यमंत्री और दुष्यंत चौटाला डिप्टी सीएम बने। इनमें कुलदीप बिशनोई के विधायक बेटे भव्य बिशनोई, किरण चौधरी की बेटी श्रुति चौधरी, केंद्रीय राज्य मंत्री राव इंद्रजीत की बेटी आरती राव, सतपाल सांगवान के बेटे सुनील सांगवान और विनोद शर्मा की पत्नी शक्ति रानी शर्मा को टिकट शामिल हैं।

तेलंगाना के जैन्नूर में रेप-मर्डर की कोशिश, आदिवासियों का प्रदर्शन

धार्मिक स्थल पर पथराव, दुकानें जलाई, पुलिस ने इंटरनेट बंद कर कर्फ्यू लगाया

संजीवनी टुडे

हैदराबाद। तेलंगाना के कुमुमरा भीम आसिफाबाद जिले के जैन्नूर में 45 साल की आदिवासी महिला के साथ रेप और मर्डर की कोशिश के मामले के बाद आदिवासी संगठनों ने प्रदर्शन किया। बुधवार (4 सितंबर) सुबह शुरू हुआ यह प्रदर्शन दोपहर तक दो गुटों के हिंसक झड़प में बदल गया। पुलिस ने बताया कि आरोपी और विक्रितम अलग-अलग धर्म के हैं। प्रदर्शन कर रहे करीब 2 हजार आदिवासियों ने आरोपी के धर्म के लोगों पर हमला किया। उन्होंने उनके धार्मिक स्थल पर पथराव किया। दुकानें भी जलाई। जवाब में आरोपी के धर्म के लोगों ने भी आगजनी और पथराव किया। स्थिति काबू में करने के लिए जैन्नूर कस्बे में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 लगाई गई। हालात बिगड़ते देख प्रशासन ने इलाके का इंटरनेट बंद कर पुलिस जवानों की तैनाती बढ़ाई। बुधवार शाम होते-होते रैपिड एक्शन फोर्स को बुलाकर इलाके में कर्फ्यू लगाया गया। पुलिस ने देर शाम बताया कि स्थिति अब काबू में है, लेकिन कर्फ्यू अभी हटाया नहीं गया है। इंटरनेट बंद करने और कर्फ्यू लगाने के बाद दोनों समुदाय के बुजुर्गों से बातचीत की गई। उन्होंने लोगों को शांति बनाए रखने की अपील की। पुलिस ने भी दोनों समुदायों



को आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजे जाने की जानकारी देते हुए शांति की अपील की। पुलिस लगातार इलाके में गश्त कर रही है। पुलिस ने बताया कि हिंसा की जांच को लेकर एक स्पेशल भी बनाई गई है। यह टीम अपराधियों की पहचान कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगी। 4 दिन पहले आंटी ड्राइवर ने रेप-हत्या की कोशिश की थी पुलिस ने बताया कि 31 अगस्त को 45 साल की आदिवासी महिला के साथ एक आंटी ड्राइवर ने रेप करने की कोशिश की थी। महिला ने शोर मचाया तो आरोपी ने महिला के मुंह और सिर पर डंडे से मारकर हत्या करने की कोशिश की। महिला के बेहोश होने पर आरोपी मौके से भाग गया। सूचना मिलते ही पुलिस ने महिला को अस्पताल जैन्नूर के अस्पताल पहुंचाया, जहां उन्हें इलाज के लिए हैदराबाद रेफर किया गया।

राजस्थान में भारी बारिश, रेलवे ट्रैक बहा, नेशनल हाईवे बंद

ट्रेनें कैसिल, जोधपुर-उदयपुर में हालात बिगड़े, सवाई माधोपुर में नदी में बहा बुजुर्ग

संजीवनी टुडे

जयपुर। राजस्थान के एक बार फिर तेज बारिश का दौर शुरू हो गया है। जोधपुर, उदयपुर में बीते दो दिन से हो रही भारी बारिश से हालात बिगड़ने लगे हैं। जोधपुर में भारी बारिश से चामुंडा नदी उफान पर है। जोधपुर-जैसलमेर रेलवे लाइन के नीचे से मिट्टी बहने के कारण ट्रैक को भी नुकसान हुआ है। आज सुबह से यहां दो ट्रेनें कैसिल हुई हैं और एक ट्रेन को रास्ते में रोका गया है। वहीं, जोधपुर शहर में भी नदियों की तरह पानी बहा रहा है। इधर, उदयपुर-अहमदाबाद नेशनल हाईवे पर भी बुधवार सुबह 7 बजे लंबा जाम लग गया। जगह-जगह पानी भरने से वाहनों की कई किलोमीटर लंबी लाइन लग गई। दोपहर करीब सवा 1 बजे जाम खुला। तीन दिन से हो रही लगातार बरसात के कारण बांसवाड़ा, डूंगरपुर, धौलपुर, फिलोशगढ़ और उदयपुर में बड़े डैम के गेट खोले गए हैं। पाली के सोजत में सुकड़ई नदी में अचानक पानी का बहाव बढ़ने के कारण बाइक सवार बुआ-भतीजा रपट पर बह गए। पास में रमेशान में दाह संस्कार के लिए आए लोगों ने तौलियों की रस्सी बनाकर 20 मिनट की मशकत के बाद दोनों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। फिलहाल, बागड़ी और सोजत रोड के बीच रास्ते को बैरिकेडस लगाकर बंद कर दिया गया है। जोधपुर की चामुंडा नदी उफान पर है। यहां



एक बोलरो में दादा-पोती समेत 3 लोग फंस गए, जिसे लोगों ने सुरक्षित बाहर निकाल लिया। दादा पोती को कॉलेज एजाम दिलवाने के लिए ले जा रहे थे। जोधपुर की चामुंडा नदी उफान पर है। यहां एक बोलरो में दादा-पोती समेत 3 लोग फंस गए, जिसे लोगों ने सुरक्षित बाहर निकाल लिया। दादा पोती को कॉलेज एजाम दिलवाने के लिए ले जा रहे थे। वहीं, उदयपुर में भारी बारिश के कारण उदयपुर-अहमदाबाद नेशनल हाईवे पर सुबह 7 बजे से कई किलोमीटर लंबा जाम लगा हुआ है। हाईवे पर जगह-जगह पानी भर गया है। टोंक में भी भारी बरसात के कारण, चाकल नदी उफान पर है। मंगलवार को नदी की रपट पर एक युवक बाइक सहित फंस गया। युवक को करीब 11 घंटे बाद बुधवार सुबह निकाला गया।

जोधपुर में ट्रेनें प्रभावित, उदयपुर में नेशनल हाईवे बंद

जोधपुर मंडल रेल प्रबंधक पंकज कुमार सिंह ने बताया कि ओसियां और तिक्री रेलवे स्टेशनों के बीच अत्यधिक जलभराव हो गया है। रानीखेत एक्सप्रेस को ओसियां में रोक दिया गया है। जैसलमेर-काठगोदा एक्सप्रेस के रूट जाम लगा हुआ है। हाईवे पर जगह-जगह पानी भर गया है। टोंक में भी भारी बरसात के कारण, चाकल नदी उफान पर है। मंगलवार को नदी की रपट पर एक युवक बाइक सहित फंस गया। युवक को करीब 11 घंटे बाद बुधवार सुबह निकाला गया।

सिंधुदुर्ग में शिवाजी महाराज की प्रतिमा बनाने वाला ठेकेदार गिरफ्तार

10 दिन से फरार था, उद्धव गुट बोला- वह अंडरवर्ल्ड डॉन नहीं, इतने दिन क्यों लगे

संजीवनी टुडे

मुंबई। महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग में शिवाजी महाराज की 35 फीट ऊंची प्रतिमा गिरने के मामले में कल्याण पुलिस ने ठेकेदार जयदीप आटे को बुधवार (4 सितंबर) देर रात गिरफ्तार कर लिया है। 26 अगस्त को मूर्ति गिरने के बाद मालवान पुलिस ने आटे के खिलाफ लापरवाही का केस दर्ज किया था। वह 10 दिन से फरार था। तलाश के लिए पुलिस की 7 टीमें बनाई गईं। उसकी तलाश मुंबई, सिंधुदुर्ग, ठाणे, कोहापुर में की गई, लेकिन वह कल्याण में छिपा हुआ था। 1 दिन पहले आटे के खिलाफ लुक आउट सर्कलर (खए) जारी किया गया था। 4 साल के जयदीप आटे ने शिवाजी महाराज की 35 फीट की प्रतिमा के पहले इतनी बड़ी मूर्ति कभी नहीं बनाई थी। वह 2 फीट ऊंची प्रतिमाएं ही बनाता था। सिंधुदुर्ग पुलिस ने स्ट्रक्चरल कंसल्टेंट और ठेकेदार रतन पाटेल को 7 दिन पहले गिरफ्तार किया था। हालांकि, उसने दावा किया था कि प्रतिमा निर्माण से उसका लेना-देना नहीं है। उसने मूर्ति के लिए केवल फ्लेटफॉर्म का डिजाइन तैयार किया था। महाराष्ट्र कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले ने बुधवार को आरोप लगाया कि शिवाजी की मूर्ति के निर्माण पर मात्र 1.5 करोड़ रुपये खर्च किए गए।



उद्धव गुट बोला- आटे अंडरवर्ल्ड डॉन नहीं, गिरफ्तार में देर क्यों लगी

शिवसेना ने आरोप लगाया कि 24 साल का आटे एग्ज शिंदे के बेटे का परिचित है। कहीं एग्ज शिंदे ने उसे अपने निवास में छिपाकर तो नहीं रखा है। गिरफ्तारी के बाद भाजपा नेता प्रवीण दारकर ने कहा- विपक्ष को अब मुंह बंद कर लेना चाहिए। पुलिस ने समय जरूर लगाया, लेकिन काम कर दिखाया। इसका जवाब देते हुए शिवसेना की नेता सुषमा अंधारे ने बुधवार रात को कहा- गिरफ्तारी का क्रेडिट सरकार को नहीं लेना चाहिए। वह कोई अंडरवर्ल्ड डॉन नहीं था। इतने दिन क्यों लगे? उसकी गिरफ्तारी पहले ही हो जानी थी। जबकि इस काम के लिए राज्य के खजाने से 236 करोड़ रुपये लिए गए। बाकी बचे 234 करोड़ इन्हें ही शिवाजी महाराज की मूर्ति निर्माण में भ्रष्टाचार हुआ है। इसकी जांच होनी चाहिए। महाराष्ट्र कला निदेशालय के डायरेक्टर राजीव मिश्रा का कहना है कि उन्होंने केवल 6 फीट की मूर्ति लगाने की परमिशन दी थी। इसके लिए मूर्तिकार ने मिट्टी का मांडल दिखाया था। मंजूरी मिलने के बाद नौसेना ने निदेशालय को यह नहीं बताया कि मूर्ति 35 फीट ऊंची होगी। न ही यह बताया गया कि इसमें स्टील की प्लेटों का इस्तेमाल किया जाएगा। नौसेना ने मूर्तिकार और सलाहकार नियुक्त किए और डिजाइन फाइनल होने के बाद इसे निदेशालय को मंजूरी के लिए भेजा गया।

सैम पित्रोदा बोले- राहुल गांधी पिता राजीव से ज्यादा समझदार

वे अच्छी स्टैटजी बनाते हैं, उनमें प्रधानमंत्री बनने के सारे गुण

संजीवनी टुडे

नई दिल्ली। राजीव गांधी की तुलना में उनके बेटे राहुल गांधी ज्यादा समझदार हैं। वे बौद्धिक होने के साथ-साथ एक बेहतर रणनीतिकार भी हैं। राजीव थोड़ा ज्यादा मेहनती थे। दोनों का काज एक जैसा है। दोनों नेता आइडिया ऑफ इंडिया के संरक्षक हैं। गांधी परिवार के करीबी और इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने शिकागो से न्यूज एजेंसी को दिए इंटरव्यू में ये बातें कहीं। पित्रोदा ने कहा कि कांग्रेस सांसद और प्रधानमंत्री राजीव गांधी और राहुल गांधी के बीच समानताओं और फर्क के सवाल पर कहा, 'मैंने कई प्रधानमंत्रियों जैसे राजीव गांधी, पीवी नरसिम्हा राव, मनमोहन सिंह, नीपी सिंह, चंद्रशेखर और एचडी देवगौड़ा के साथ काम किया है। मुझे कई पूर्व पीएम को बहुत करीब से देखने का मौका मिला, लेकिन राहुल और राजीव के बीच शायद यही अंतर है कि राहुल ज्यादा बौद्धिक, विचारक हैं। राजीव थोड़े ज्यादा कर्मशील थे। उनका काज एक जैसा है। लोगों के लिए उनकी चिंताएं और भावनाएं एक जैसी हैं। वे सच में बहुत सरल लोग हैं। उनकी अपनी कोई निजी जख्मेत नहीं हैं। कांग्रेस नेता ने आगे कहा, 'राहुल और राजीव अलग-अलग समय, साधनों, अनुभवों की उपज हैं।

पित्रोदा बोले- राहुल की गलत इमेज बनाने के लिए कैपेन चला

पित्रोदा ने कहा कि राहुल की एक गलत इमेज बनाई गई थी। उन्हें बदनाम करने के लिए लाखों-करोड़ों डॉलर खर्च किए गए। मीडिया में जो राहुल की इमेज थी, वह एक प्लान्ड कैपेन पर आधारित थी। राहुल काफी पढ़े-लिखे हैं। लोगों ने कहा कि वे कभी कॉलेज नहीं गए। उनके बारे में झूठी बातें कही गईं। कांग्रेस नेता ने कहा, 'अब राहुल को वैसी छवि सामने आ रही है, जैसे वे सच में हैं। उनकी दो भारत जोड़ो यात्राओं ने इसमें काफी मदद की। मैं इसका श्रेय राहुल को देता हूँ। उन्होंने लंबे समय तक इसके खिलाफ लड़ाई लड़ी और बच गए। कोई और रहता तो बच नहीं पाता। किसी व्यक्ति, उसके परिवार, उसकी विरासत, उसकी पार्टी के चरित्र पर दिन-रात हमला करना बुरा है। ये मतलबी लोग हैं जो जानबूझकर झूठ बोलते हैं, धोखा देते हैं और व्यक्तियों के बारे में तरह-तरह की बातें कहते हैं। हालांकि अब जनता को यह एहसास होने लगा है कि मीडिया पर किसी का कंट्रोल है। लोगों को नुकसान पहुंचाने के लिए खबरें बनाई जाती हैं। झूठ सामने आ रहा है। राहुल अपने जीवन में दो बड़े सफेद से गुजरे हैं। उन्होंने अपनी दादी और अपने पिता की मौत देखी। राहुल और राजीव का सफर अलग-अलग है। कांग्रेस ने जिस भारत की कल्पना की थी और पार्टी का हर नेता उसमें विश्वास करता है, वह एक ऐसा भारत है, जिसकी कल्पना कांग्रेस पार्टी ने की थी और पार्टी का हर नेता उसमें विश्वास करता है। नरसिम्हा राव इसमें विश्वास करते थे, खड्गे इसमें विश्वास करते हैं। कांग्रेस के हम सभी नेताओं का सामूहिक रूप से यह काम है कि हम उस भारत का निर्माण करें, जिसकी परिकल्पना हमारे संस्थापकों ने की थी। पित्रोदा ने विदेश यात्राओं के दौरान केंद्र की आलोचना करने वाली राहुल की टिप्पणियों को लेकर भाजपा के हमले को बेजुनियाद करार दिया। उन्होंने कहा कि सरकार की आलोचना करना भारत की आलोचना नहीं है। विपक्ष के नेताओं का सरकार की आलोचना करना ठीक है। यह उनका काम है, तो फिर शिकायत क्यों करें।



मनी लॉड्रिंग केस में सुप्रीम कोर्ट की इंडी को फटकार

क्या हम इतने कठोर हो सकते हैं कि आरोपी को मामले से जुड़े दस्तावेज न दिखाएं

संजीवनी टुडे

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार (4 अगस्त) को मनी लॉड्रिंग से जुड़े मामले की जस्टिस अभय एस ओका, जस्टिस ए अमानुल्लाह और जस्टिस एमली मसीह की बेंच ने सुनवाई की। कककी और से एंडिशनल सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू कोर्ट में मौजूद रहे। फिलहाल बेंच ने फेसला सुरक्षित रख लिया है। बेंच ने इंडी से पूछा- एजेंसी आरोपी को जांच के दौरान जब्त किए दस्तावेजों नहीं दे रही है। क्या ऐसा होना आरोपी के जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार का उल्लंघन नहीं है। ऐसे बहुत ही गंभीर मामले हैं, जिनमें जमानत दी जाती है, लेकिन आजकल मजिस्ट्रेट के केसों में लोगों को जमानत नहीं मिल रही। दरअसल, साल 2022 का सरला गुप्ता बनाम ककड़स सवाल से संबंधित है कि क्या जांच एजेंसी आरोपी को उन महत्वपूर्ण दस्तावेजों से वंचित कर सकती है, जिन पर वह प्री-ट्रायल फ्रेज में पीएमएएल मामले में भरोसा कर रही है। सुप्रीम कोर्ट ने 28 अगस्त को अवैध खनन मामले में हेमंत सोरन के करीबी प्रेम प्रकाश को बेल दी थी। जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस केवी विश्वनाथन की बेंच ने प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉड्रिंग एक्ट के तहत दर्ज केस में जांच एजेंसी को निर्देश दिया। कोर्ट ने कहा था कि किसी व्यक्ति की आजादी मूल सिद्धांत है। हमने सिसोदिया केस में भी कहा था कि बेल नियम है और जेल एक अपवाद। चंद्रखंड के संशोधन 45 में मनी लॉड्रिंग मामले में आरोपी के बेल की 2 शर्तें दी गई हैं। पहला, जब ऐसा लग रहा हो कि आरोपी ने कोई अपराध नहीं किया है। दूसरा, जमानत पर आरोपी कोई अपराध नहीं करेगा। लेकिन ये दोनों चीजें आजादी के मूल सिद्धांत को नहीं रोक सकतीं। कोर्ट ने कहा था कि इस केस में ऐसा लगता है कि आरोपी प्रेम प्रकाश को बेल मिलने के बाद भी केस पर असर नहीं पड़ेगा। इसलिए हम प्रेम प्रकाश को बेल दे रहे हैं।

पेरिस पैरालिंपिक में भारत को 24वां मेडल

क्लब थ्रो में धरमबीर ने गोल्ड, प्रणव ने सिल्वर जीता, आर्चरी में हरविंदर सिंह को गोल्ड

संजीवनी टुडे

नई दिल्ली। पेरिस पैरालिंपिक में भारत ने 7वें दिन 2 गोल्ड और 2 सिल्वर मेडल जीत लिए हैं। देर रात 2 बजे मंस क्लब थ्रो में धरबीर ने गोल्ड और प्रणव सूरमा ने सिल्वर मेडल दिलाया। उनसे पहले आर्चरी में हरविंदर सिंह ने गोल्ड और शॉट पुट में सचिन सरजेराव ने सिल्वर जीता था। भारत ने पैरालिंपिक इतिहास में अपना बेस्ट प्रदर्शन करते हुए अब तक 24 मेडल जीत लिए हैं। 5 गोल्ड, 9 सिल्वर और 10 ब्रॉन्ज के साथ भारत मेडल टेबल में 13वें नंबर पर है। भारत ने पांचवें दिन 8 और छठे दिन 5 मेडल जीते थे। 7वें दिन देश ने 4 मेडल जीते। मंस एफ-51 कैटेगरी के क्लब थ्रो इवेंट में भारत ने 2 मेडल जीते। धरमबीर सिंह ने 34.92 मीटर के बेस्ट थ्रो के साथ गोल्ड और प्रणव सूरमा ने 34.59 मीटर के बेस्ट थ्रो के साथ सिल्वर मेडल जीता। सर्बिया के जेलिको डिमित्रिजेविक ने 34.18 मीटर के बेस्ट थ्रो के साथ ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया। क्लब थ्रो इवेंट में भारत क्लीन स्वीज कर तीनों मेडल जीत सकता था, लेकिन अमित कुमार 6 अंटेम्प्ट में 4 थ्रो फाउल कर बैठे। उनके 2 थ्रो सही रहे।

आर्चरी गोल्ड जीतने वाले पहले भारतीय बने हरविंदर



पैरालिंपिक गेम्स में आर्चरी का गोल्ड मेडल जीतने वाले हरविंदर सिंह पहले ही भारतीय बने। हरविंदर मंस इंडिविजुअल रिकर्व ओपन के 'किंग राउंड' में 9वें नंबर पर रहे थे। राउंड ऑफ 32 में उन्होंने चीनी ताइपे के लुंग-हुई सेंग को 7-3 से हराया। हरविंदर ने प्री-क्वार्टर फाइनल में सेतियावान को 6-2 से हराया। हरविंदर ने कोलंबिया के जुलियो हेक्टर रमिरेज के खिलाफ क्वार्टर फाइनल 6-2 से जीता। सेमीफाइनल में हरविंदर ने ईरान के मोहम्मद रेजा को 7-3 से हराया। उन्होंने फिर पोलैंड के लुकास सीजेक को 6-0 से फाइनल हराया और गोल्ड मेडल जीत लिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पैरा आर्चरी का गोल्ड मेडल जीतने वाले हरविंदर सिंह को बधाई दी। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक पर लिखा, 'पैरा आर्चरी में स्पेशल गोल्ड। मंस इंडिविजुअल के रिकर्व ओपन में गोल्ड मेडल जीतने पर हरविंदर सिंह को बधाई। उनका फोकस, टारगेट और स्पिरिट कमाल की है।

खबरें फटाफट

ब्लॉक स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन आज

संजीवनी टुडे

राजगढ़ (अलवर)। शिक्षा विभाग की ओर से ब्लॉक स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन करूबे के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय न.3 में प्रातः 10 बजे से आयोजित होगा। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी रामगोपाल मीना ने बताया कि शिक्षक दिवस पर ब्लॉक स्तर पर चर्चानित तीन शिक्षकों का सम्मान समारोह आयोजित होगा। उन्होंने बताया कि कक्षा वर्ग 1 से 5 में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नया गांव बोलका के अध्यापक बन्नी प्रसाद मीना, कक्षा वर्ग 6 से 8 में राउप्रावि रामसिंहपुरा के शारीरिक शिक्षक चन्द्रमर तथा 9 से 12 वर्ग में राउप्रावि नया गांव बोलका के वरिष्ठ अध्यापक सत्यनारायण मीना को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि ब्लॉक के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय बड़ला के शिक्षक दिनेश कुमार सैनी का राज्य स्तर पर चयन हुआ है। उनको राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।

बी एल मेहरड़ा "सामरथ्य ग्लोबल एक्सीलेंस अवार्ड" से सम्मानित



संजीवनी टुडे

विराटनगर। समाजसेवी समर्पण संस्था के उपाध्यक्ष व डॉ आंबेडकर विचार मंच के प्रदेश महासचिव विराट नगर निवासी जयपुर स्थित राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में सामरथ्य सेवा संस्थान द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर के आयोजन में राजस्थान सरकार की उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी व कैबिनेट मंत्री अनिशा गहलोत-सामाजिक न्याय अधिकारिता विभाग एवं अनेक उच्च स्तर के ऋद्ध अधिकारियों एवं समाज सेवीयों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर "सामरथ्य ग्लोबल एक्सीलेंस अवार्ड -2024" दिया गया। बी एल मेहरड़ा को यह राष्ट्रीय अवार्ड सम्मान समाज सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय, सराहनीय एवं उत्कृष्ट कार्य करने पर दिया गया है। इस आयोजन में 16 राज्यों के समाजिक क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 65 अर्वाडीज को यह सम्मान दिया गया है। इस आयोजन में डॉ.टीकम चंद बोहरा ऋद्ध संयुक्त शासन सचिव वित्त, डॉ. ओम प्रकाश बैरवा आईएसएस आयुक्त विभागीय जांच, शासन सचिवालय, अनिल लोढ़ा चैनल हेड -ए वन टीवी राजस्थान आदि मौजूद रहे।

रामदयाल बैरवा शिक्षक दिवस पर होंगे सम्मानित

संजीवनी टुडे

बूंदी। सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन के जन्मदिवस 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के मौके पर बूंदी जिले के बूंदी ब्लॉक स्तर पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मादूना में कार्यरत व्याख्याता रामदयाल बैरवा को सर्वश्रेष्ठ शिक्षण कार्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावी प्रबंधन एवं छात्रों के हित के लिए सदैव तत्पर रहने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा, बूंदी ब्लॉक स्तर पर शिक्षक सम्मान प्राप्त होने पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी बूंदी के द्वारा जिला स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में किया जाएगा सम्मानित।

विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण कर वृक्ष संरक्षण की ली शपथ



संजीवनी टुडे

जयपुर। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास प्रांत जयपुर द्वारा वृद्ध वृक्षारोपण, ग्रीन जयपुर समृद्ध जयपुर अभियान के अंतर्गत एक पेड़ मां के नाम मनोभाव के साथ पशुपाला विभाग के साथ श्री महावीर महाविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण का आयोजन 04 सितंबर 2024 को किया गया। अभी तक न्यास के माध्यम से 12000 से अधिक पौधे विद्यार्थियों, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विभिन्न समितियों के माध्यम से लगाए जा चुके हैं पर्यावरण संरक्षण के विषय को केंद्र बिंदु रखते हुए यह आयोजन किया गया जिसमें विद्यार्थियों ने एक एक पौधे को गोद लेकर उनके संरक्षण की शपथ ली। आयोजन के मुख्य अतिथि राहुल द्वेदी, अध्यक्ष, पर्यावरण एवं जल संरक्षण परिषद, नई दिल्ली, प्रताप राव, वरिष्ठ पत्रकार एवं भाजपा के प्रवक्ता, प्रांत संयोजक नितिन कालसोलीवाल, आलोक पारिख, मंत्रालय कर्मचारी समूह उपाध्यक्ष, पशुपालन विभाग, प्राचार्य डॉ आशीष गुप्ता, डॉ नीलिमा पारीक, प्रांत पर्यावरण प्रमुख हादिक पाठक एवं विभाग के पदाधिकारी, सभी शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

किसान अब विदेशों में सीख सकेंगे उन्नत खेती के गुर

एनहांसमेंट प्रोग्राम के तहत होगा किसानों का चयन, 10 सितम्बर तक कर सकेंगे आवेदन

संजीवनी टुडे

अलवर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की बजट घोषणा वर्ष 2024-25 के तहत किसानों की क्षमता वृद्धि हेतु नॉलेज एनहांसमेंट प्रोग्राम अन्तर्गत प्रथम चरण में 100 प्रगतिशील युवा कृषकों चयन कर इंजरायल सहित अन्य देशों में प्रशिक्षण एवं भ्रमण हेतु भेजा जायेगा। इसके लिए किसान 10 सितम्बर तक राजकिसान सार्थी पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। उद्यान विभाग के उप निदेशक उद्यान कन्हैया लाल मीना ने बताया कि प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए प्रदेश के 10 कृषि संभागों से कृषि एवं डेयरी में विशेष उपलब्धि के लिए पहचान बनाने वाले सम्मानित कृषकों का चयन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण में किसानों को कम भूमि और कम पानी में पॉली हाउस व ऑफ सीजन में बेहतर खेती एवं पशुपालन के तरीके सीखाए जाएंगे।

निर्धारित योग्यता एवं मापदण्ड को पूर्ण करने वाले जिले के किसान कार्यालय उप निदेशक उद्यान विभाग अलवर में सम्पर्क करें।

प्रशिक्षण में भाग लेने हेतु पात्रता

उन्होंने बताया कि कृषि क्षेत्र में चयन हेतु कृषक के पास कम से कम एक हैब्टेयर कृषि भूमि का भूस्वामित्व होना आवश्यक है। कृषक विगत 10 वर्षों से लगातार अपनी कृषि भूमि पर खेती कर रहा हो, कृषक द्वारा उच्च कृषि तकनीक (संरक्षित खेती, सूक्ष्म सिंचाई, मल्लिचिंग, सौर ऊर्जा पम्प, ड्रोन, फर्टिगेशन, ऑटोमेशन, फार्म पौड/डिग्गो) अपनाई जा रही हो, कृषक का कृषि विभाग जिला/राज्य स्तरीय पुरस्कार हेतु चयन किया गया हो, कृषक पंचायती राज संस्था, सहकारी संस्था, वाटर यूजर



एसोसिएशन, कृषि मंडी आदि में विगत 10 वर्षों में किसी पद पर रहा हो या एफपीओ का सदस्य हो,

कृषक की आयु 50 वर्ष से कम हो, कृषक के विरुद्ध पूर्व/वर्तमान में संज्ञेय अपराध के प्रकरण लंबित न हो, कम से कम माध्यमिक स्तर की शैक्षणिक योग्यता धारक हो, कृषक के पास वैध पासपोर्ट हो। इसी प्रकार दुग्ध उत्पादक/पशुपालन क्षेत्र में चयन हेतु कृषक वास्तविक रूप से कम से कम 20 गाय/भैंस की डेयरी या 10 ऊंट या 50 भेड़/बकरी का स्वामित्व रखता हो, कृषक विगत 10 वर्षों से डेयरी या पशुपालन के पेशे से जुड़ा हो, कृषक द्वारा उच्च पशुपालन/डेयरी तकनीक अपनाई जा रही हो, कृषक का चयन कृषि या पशुपालन विभाग द्वारा पशुपालन/डेयरी क्षेत्र में जिला/राज्य स्तरीय पुरस्कार हेतु किया गया हो, कृषक अपने क्षेत्र में अगुवा पशुपालक के रूप में जाना जाता हो, कृषक पंचायती राज संस्था, सहकारी संस्था, वाटर यूजर एसोसिएशन, कृषि

मंडी आदि में विगत 10 वर्षों में किसी पद पर रहा हो या एफपीओ का सदस्य हो, कृषक की आयु 45 वर्ष से कम हो, कृषक के विरुद्ध पूर्व/वर्तमान में संज्ञेय अपराध के प्रकरण लंबित न हो, कम से कम माध्यमिक स्तर की शैक्षणिक योग्यता धारक हो, कृषक के पास वैध पासपोर्ट होना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि उक्त योग्यता रखने वाले किसानों का चयन खण्ड स्तरीय कमेटी द्वारा स्कोर क्राइटेरिया निर्धारित कर किया जावेगा। स्कोर क्राइटेरिया के लिए कुल 100 अंक निर्धारित किए गए हैं जिनमें भू-स्वामित्व हेतु 5 अंक, नियमित खेती/पशुपालन करने के लिए 10, उच्च तकनीक खेती के लिए 20, पुरस्कार के लिए 20, संस्था के सदस्य के 15, उम्र के 10, आध्यात्मिक मुकदमा नहीं होने के 5, शिक्षा के 10, पासपोर्ट के 5 अंक होंगे।

शिक्षक दिवस पर शिक्षक गुरुदीन वर्मा ने अपने विद्यालय की बदली तस्वीर

संजीवनी टुडे

शिक्षक वर्मा ने भामाशाह बनकर अपने विद्यालय का कराया रंग-रोगन

पिण्डवाड़ा/सिरोही। नगर के निकटवर्ती स्थित नाँदिया गांव के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में नियुक्त शिक्षक गुरुदीन वर्मा शिक्षक दिवस पर भामाशाह बनकर अपने विद्यालय का रंग-रोगन करवाया है। शिक्षक वर्मा ने मीडिया को बताया कि उन्होंने खुद भामाशाह बनकर अपने विद्यालय के प्राथमिक परिसर का रंग-रोगन करवाया है। इस कार्य के लिए उनके विद्यालय के संस्था प्रधान हड़मत सिंह राठीड और गांव के प्रतिनिधि ताराराम उनका माला एवं साफा पहनाकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर संस्था प्रधान राठीड ने शिक्षक एवं भामाशाह वर्मा के इस कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि किसी भामाशाह से सहयोग लेने से पहले यह पहल शिक्षक खुद से करें तो इससे भामाशाह भी प्रेरित होते हैं। गांव के प्रतिनिधि ताराराम ने कहा कि मेरे जीवन में और इस गांव में यह ऐसे पहले शिक्षक ने जिन्होंने खुद भामाशाह बनकर इस विद्यालय के विकास की शुरुआत की। शारीरिक शिक्षक



नरेंद्र सिंह ने कहा कि इन्होंने इस विद्यालय को वह सूरत दी है जिसकी तरह हर कोई आकर्षित होता है और इनके कार्य की प्रशंसा करता है। स्थानीय विद्यालय के पंचायत शिक्षक सांकलाराम ने कहा कि इनकी शुरुआत ही इस विद्यालय के विकास के प्रति रुचि रही है और एक भामाशाह के रूप में यह इस विद्यालय को स्मार्ट टीवी, कुर्सियां, पेंडें, पोषाहार थालियां, डिजिटल घड़ी, लेखन सामग्री आदि भेंट कर चुके हैं और भविष्य में भी इन्होंने इस विद्यालय में विकास में सहयोग देने की बात कही है। एक भामाशाह के रूप में

इनको इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर उपखण्ड स्तर पर सम्मानित किया गया है। ज्ञात हो कि शिक्षक वर्मा मूलतः बारां जिले के मूलनिवासी हैं जो एक अच्छे साहित्यकार भी हैं। साहित्यकार के रूप में वर्मा अब तक 250 से ज्यादा सम्मान पत्र प्राप्त कर चुके हैं और 3000 के लगभग रचनायें लिख चुके हैं। इस अवसर पर उपस्थित शिक्षक धनराज लोहार, मंजीत सिंह, इरफान खान, बिन्दु चौधरी आदि द्वारा भी अपने बक्तव्य में वर्मा के कार्यों की प्रशंसा की गई और माला पहनाकर सम्मान किया गया।

राष्ट्रीय सेवा ही भाजपा का संस्कार: अरुण चतुर्वेदी

संजीवनी टुडे

प्रत्येक बूथ पर 200 सदस्य बनाने का दिया लक्ष्य

अलवर। भारतीय जनता पार्टी जिला अलवर द्वारा सदस्यता अभियान के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन अंबेडकर नगर स्थित जिला कार्यालय पर किया गया बैठक में मुख्य वक्ता के रूप में पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं सदस्यता अभियान के प्रदेश संयोजक अरुण चतुर्वेदी रहे। बैठक में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी एक राजनीतिक पार्टी नहीं है अपितु राष्ट्रहित का एक विचार है। इस विचार का प्रभाव ही है कि भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता स्वयं को समाज एवम राष्ट्र की सेवा में समर्पित करता है। 2 सितंबर से भाजपा का राष्ट्रीय व्यापी सदस्यता अभियान प्रारंभ हो चुका है। उन्होंने बताया कि 11 से 17 सितंबर तक महा सम्पर्क अभियान चलेगा। जिसमें प्रत्येक बूथ पर 200 सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा गया है। राजस्थान प्रदेश पूरे देश में प्रथम स्थान पर आए इसके लिए प्रत्येक कार्यकर्ता दृढ़ संकल्पित है और पूरे जोश व ऊर्जा के साथ अभियान में सहभागिता निभा रहा है। बैठक में जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि अलवर दक्षिण जिला कार्यकर्ताओं के बल पर पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान पर आकर एक कीर्तिमान स्थापित करेगा। लगभग



प्रत्येक बूथ पर बूथ कार्यशाला व प्रवास के कार्यक्रम पूर्ण हो चुके हैं। 2 से 10 सितंबर तक प्रथम चरण में 11 से 17 सितंबर तक महासम्पर्क अभियान चलेगा। बैठक में पूर्व विधायक ज्ञान देव आहूजा, जय राम जाटव, पूर्व जिला अध्यक्ष पंडित धर्मवीर शर्मा, संजय सिंह नरुका, इंद्रजीत पाटा, सदस्यता अभियान के जिला संयोजक हरिशंकर खंडेलवाल, शशिकांत बोहरा, जिला प्रभारी राजेंद्र शेखावत, जिला महामंत्री राम अवतार चौधरी, शिवलाल मीणा महा सिंह चौधरी, जिला उपाध्यक्ष हरीश यादव रमन गुलाटी विष्णु शर्मा जिला मंत्री रीता सेठी प्रवक्ता हुकुम फागना नरेश

धानवत, जिला मीडिया प्रभारी लक्ष्मी नारायण गुप्ता मंडल अध्यक्ष मनोज चौहान, हरीश अरोड़ा, राजेंद्र सैनी, अशोक तिवारी, विधानसभा संयोजक राजेंद्र सिंह शेखावत, जितेंद्र राठीर, तरुण जैन, सुरेश खारवा, इब्राहिम खान, के के मदान, जोगेंद्र गुप्ता, दीपक पंडित, दिनेश गुप्ता, राजकुमार पंडा, फूलवती सोमवंशी, आनंद बेनीवाल, अशोक पाठक, श्याम यादव, महेंद्र पटवारी, सुनील चौधरी सहित सैकड़ों की संख्या में भाजपा कार्यकर्ता व पदाधिकारी उपस्थित रहे। यह जानकारी जिला मिडिया प्रभारी लक्ष्मी नारायण गुप्ता ने दी।

कृषि यंत्र खरीद पर किसानों को मिलेगा 50 प्रतिशत तक अनुदान

संजीवनी टुडे

टोंक। खेती-किसानों में कृषकों द्वारा बुआई, जुताई और बिजाई जैसे कठोर कार्य किये जाते हैं। इन्हीं कार्यों को सुगम बनाने के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर मैकेनाइजेशन योजना के प्रावधानों के तहत किसानों को आधुनिक कृषि यंत्रों पर अनुदान देकर लाभांशित किया जा रहा है। जिससे किसानों पर आर्थिक भार कम पड़ेगा और कृषि कार्य आसान हो जायेंगे साथ ही किसानों की आय में भी वृद्धि होगी। कृषि अधिकारियों ने बताया कि योजना के तहत कृषक 13 सितंबर तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि कृषि यंत्रों पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, लघु, सीमांत एवं महिला किसानों को ट्रैक्टर की बीएचपी के आधार पर लागत का अधिकतम 50 प्रतिशत तक तथा अन्य श्रेणी के कृषकों को लागत का अधिकतम 40 प्रतिशत तक अनुदान दिया जायेगा। लघु एवं सीमांत श्रेणी के किसानों को ऑनलाइन आवेदन से पूर्व जैन आधार पर लघु एवं सीमांत श्रेणी जुड़वाना आवश्यक है, आवेदन के दौरान उक्त प्रमाण पत्र संलग्न करना होगा। उन्होंने बताया कि राज किसान साथी पोर्टल पर ई-मित्र के माध्यम से जनाधार कार्ड, जमाबंदी की नकल, कृषि यंत्र का कोटेशन



आदि दस्तावेजों की सहायता से ऑन-लाइन आवेदन कर सकते हैं। किसानों को प्रचलित ट्रैक्टर संचालित सभी प्रकार के कृषि यंत्र जैसे रोटावेटर, थ्रेसर, कर्लीवेटर, बंडफार्मर, रीपर, सोड कम फर्टिलाइजर ड्रिल, डिस्क हेरो, प्लॉउ आदि यंत्रों पर अनुदान दिया जायेगा। किसान द्वारा कृषि यंत्रों को पंजीकृत फर्म से खरीदने तथा सत्यापन के बाद अनुदान उनके जनाधार से जुड़े बैंक खाते में हस्तांतरित किया जायेगा। एक किसान को एक प्रकार के कृषि यंत्र पर तीन वर्ष की कालावधि में केवल एक बार अनुदान दिया जायेगा। किसानों को वित्तीय वर्ष में एक ही कृषि यंत्र पर अनुदान दिया जायेगा। प्रशासनिक स्वीकृति जारी करने से पूर्व खरीदे हुए यंत्रों को कृषि यंत्रों पर अनुदान नहीं दिया जायेगा। एक जैन आधार द्वारा एक ही आवेदन स्वीकार होगा कृषि यंत्रों पर अनुदान के लिए किसान के नाम भूमि और ट्रैक्टर चलित यंत्र पर अनुदान के लिए ट्रैक्टर का रजिस्ट्रेशन आवेदक किसान के नाम होना आवश्यक है।

कार्यालय नगर पालिका मंडल चाकसू, जिला जयपुर ग्रामीण (राज.)

क्रमांक/ न.पा.चा./ 2024/1931

दिनांक :- 03/09/2024

आपति आमंत्रण सूचना

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि इस नगर पालिका क्षेत्र में स्थित विभिन्न भूखण्डों की निम्नानुसार पत्रावली / प्रार्थना पत्र भय साईट प्लान राजस्थान नगरीय क्षेत्र कृषि भूमि के अकृषि उपयोग के अनुज्ञा एवं आवंटन नियम 2012 के तहत निस्तारण हेतु विचाराधीन है :-

क्र.सं.	नाम	पिता/पति का नाम	पता	परिचा वर्ग गीटर	विषय
1.	भरत सिंह	राम शरण	प्लॉट नं. 37, संजीवनी हिवन्स, चाकसू	83.51	नियमन
2.	भवानी शंकर शर्मा	मोहन लाल शर्मा	प्लॉट नं. 11-25, संजीवनी रॉयल्स, चाकसू	133.70	नियमन
3.	भवानी शंकर शर्मा	मोहन लाल शर्मा	प्लॉट नं. E-10 (Block-TT), संजीवनी रॉयल्स, चाकसू	44.40	नियमन
4.	भवानी शंकर शर्मा	मोहन लाल शर्मा	प्लॉट नं. E-11 (Block-TT), संजीवनी रॉयल्स, चाकसू	44.40	नियमन
5.	ज्योत्सना सिंह मीणा	राकेश मीणा	प्लॉट नं. 11-168, संजीवनी रॉयल्स, चाकसू	133.70	नियमन
6.	पूसा राम बागडी	नाथू लाल बागडी	प्लॉट नं. 33, संजीवनी हिवन्स, चाकसू	83.61	नियमन

उक्त भूमि के नियमन के संबंध में किसी भी व्यक्ति को कोई भी आपति है तो वह आपति को लिखित में सूचना प्रकाशन की तिथि से सात दिवस के अंदर- 2 इस कार्यालय में प्रस्तुत कर सकते हैं। अर्थात् पररात प्राप्त आपति अंगीकार नहीं की जायेगी एवं तदनुसार प्रकरण का निस्तारण कर दिया जावेगा।

उक्त सूचना आज दिनांक 03/09/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं सील मुहर द्वारा प्रसारित किया गया।

अधिष्ठापी अधिकारी

नगर पालिका चाकसू

खबरें फटाफट

स्कूल में पोषाहार बनाते समय भभका सिलेंडर: क्लास में पढ़ रहे बच्चे डरे

संजीवनी टुडे
सराइ। सलूनर के सेमारी के राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल श्यामपुरा में बुधवार सुबह सिलेंडर में अचानक आग लग गई। गनीमत रही कि समय रहते आग पर काबू पा लिया गया। नहीं तो बड़ा हादसा हो जाता। स्कूल में सैकड़ों बच्चे पढ़ रहे थे। घटना स्कूली बच्चों के लिए पोषाहार बनाते समय हुई। जब अचानक गैस नली में आग पकड़ी और अचानक सिलेंडर धक्का गया। धीरे-धीरे आग तेज होने लगी। इस बीच एक स्कूली छात्र दौड़कर पहुंचा और उसने सिलेंडर से रेगुलेटर को अलग कर दिया। टीचर पास ही के पेट्रोल पंप से अग्निशमन किट लेकर पहुंचे और आग पर काबू पाया गया। घटना के दौरान स्कूल क्लास में पढ़ रहे बच्चे बाहर गए और दहशत का माहौल हो गया। सूचना पर सेमारी तहसीलदार इंद्रलाल प्रजापति और सेमारी थाना पुलिस मौके पर पहुंची। अफसरों ने घटना की जानकारी ली।

अव्यवस्थाओं का अंबार: आक्रोशित महिलाओं ने नगरपालिका में फेंके कचरे के ढेर, जताया विरोध



संजीवनी टुडे
बड़ागाँव नगरपालिका क्लब भवन में अव्यवस्थाओं को लेकर परेशान महिलाओं ने नगरपालिका कार्यालय पहुंचकर जमकर प्रदर्शन किया। जहां महिलाओं ने नारेबाजी करते हुए नगरपालिका के कर्मचारियों को नींद से जागने का आह्वान किया। महिलाओं में आक्रोश इतना था कि उन्होंने कचरे के ढेर लाकर नगरपालिका कार्यालय में खाली कर दिए। महिलाओं ने बताया कि ना तो नगरपालिका समय पर खुल रही है और ना ही कोई कर्मचारी मिलते हैं। पालिका में किसी भी तरीके का काम नहीं हो रहा है। इसमें साफ-सफाई, लाइट, बिजली आदि शामिल है। मौके पर समस्याओं से रूबरू कराने के लिए नगरपालिका अध्यक्ष को भी कई बार सम्पर्क किया गया। लेकिन अध्यक्ष ने फोन नहीं उठाया, जिससे महिलाओं का आक्रोश और बढ़ गया। सभी का कहना था कि स्वच्छ भारत मिशन के तहत पूरे देश में जगह-जगह सफाई अभियान चलाए जा रहे हैं, लेकिन क्लब भवन नगरपालिका क्षेत्र की सच्चाई कुछ और ही है। यहां हर घर के बाहर कचरे के ढेर हैं।

भाई ने भाई को चाकू मारा

संजीवनी टुडे
राजसमंद। कांकरोली पुलिस थाना सर्कल में बड़लिया गांव में एक भाई ने दूसरे भाई को चाकू से वार कर घायल कर दिया। घायल को आरके हॉस्पिटल रेफर किया गया। जहां घायल की हालत गंभीर होने पर इलाज के लिए उदयपुर रेफर किया गया। जानकारी के अनुसार बड़लिया गांव में आपसी विवाद के चलते दो भाइयों में झगड़ा इतना बढ़ गया कि एक भाई ने दूसरे भाई के पेट में चाकू घोंप दिया। पुलिस के अनुसार गांव में कैलाश उर्फ भीम राज कुमावत और गणेश कुमावत के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हो गई जो देखते ही देखते हाथापाई में बदल गई। इस दौरान भीम राज ने गुस्से में आकर गणेश के पेट में चाकू से हमला कर दिया। गणेश लाल के पेट में बाईं ओर घाव हो गया व खून बहने लगा। वह गिर गया।

बाइक चोरी का खुलासा, एक आरोपी गिरफ्तार

संजीवनी टुडे
राजसमंद। दिवेर पुलिस ने बाइक चोरी की वारदात का खुलासा करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार कर बाइक बरामद की है। दिवेर पुलिस थाना में चार्ज भवानी शंकर के अनुसार 17 जुलाई को मादा की बस्सी पेट्रोल पंप के पास एक मकान से अज्ञात चोर ने बाइक चोरी की वारदात को अंजाम दिया। इसके बाद बाइक मालिक बाबुखान (60) पुत्र अहमखान कुरेशी निवासी राणावास थाना सिरयारी हाल मादा की बस्सी निवासी ने दिवेर पुलिस दर्ज कर चोरी की रिपोर्ट पेश की। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की व संदिग्धों पर नजर रखी। मुखबिर से मिली जानकारी के बाद पुलिस ने सज्जन सिंह (19) पुत्र बहादुर सिंह रावत निवासी खेड़ा कल्याणपुर थाना सिरयारी जिला पाली को चोरी की बाइक सहित गिरफ्तार किया।

सेमारी में 3 इंच से ज्यादा बारिश, शिव मंदिर जलमग्न

संजीवनी टुडे
सराइ। करबे में इलाहाबाद बैंक गली में बुधवार सुबह केतुपोषा मकान ढह गया। मकान में कोई नहीं रहता था। उक्त मकान मालिक योगेश वैष्णव बाहर रह रहे हैं। क्षेत्र में विगत दो दिन से रुक रुक कर बारिश से मंगलवार देर रात्रि को 78 मिमी बारिश दर्ज की गई, वहीं 21 फीट भराव क्षमता वाले सेमारी तालाब का जलस्तर साढ़े चौदह फीट हो गया। रात भर पानी आने से शिव मंदिर जलमग्न हो गया। कुण्ड पश्चिमिकासा मोबाइल युनिट का भवन तो दो-तीन साल पूर्व बना है, लेकिन बारिश के दिनों में इस भवन की दीवारों से पानी रिस रहा है। इससे पूरे भवन में करीब आधा फीट पानी भर रहा है। भवन की दीवारों में सीलन आ गई है। यहां पशुपालक आते हैं, लेकिन पानी भर होने की वजह से बेचने में परेशानी उठानी पड़ती है।

डूंगरपुर जिले सहित प्रदेश के 100 किसान उन्नत खेती के गुर सीखने जाएंगे विदेश

बजट घोषणा-किसानों की क्षमता वृद्धि के लिए नॉलेज एनहांसमेंट प्रोग्राम] 10 सितम्बर 2024 तक कर सकते हैं ऑनलाइन आवेदन

संजीवनी टुडे
डूंगरपुर। प्रदेश के 100 युवा एवं प्रगतिशील किसान प्रशिक्षण के लिए विदेश भेजे जाएंगे। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में किसानों के हित में निरंतर फैसले ले रहे राज्य सरकार ने वर्ष 2024-25 की बजट घोषणा में नॉलेज एनहांसमेंट प्रोग्राम शुरू करने का निर्णय लिया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत पहले चरण में प्रगतिशील युवा किसानों को उन देशों में भेजा जाएगा जहां कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में नवाचार किए जा रहे हैं एवं उच्च तकनीक के प्रयोग से कम जगह में अधिक फसल उत्पादित की जा रही है। उपनिदेशक हॉर्टिकल्चर डूंगरपुर ने बताया कि पात्र का चयन प्रस्तावित मापदंडों, संभावनाएं निर्धारित लक्ष्य एवं दिए गए दिशा-निर्देशों के अनुरूप किया जाएगा। उपनिदेशक हॉर्टिकल्चर डूंगरपुर दर्लसिंह गरासिया ने बताया कि नॉलेज एनहांसमेंट प्रोग्राम के तहत चयन के लिए जो मापदंड तय किए गए हैं उनमें



कृषक के पास कम से कम एक हेक्टेयर कृषि भूमि का भूस्वामित्व हो, पिछले 10 वर्षों से लगातार अपनी कृषि भूमि पर खेती कर रहा हो, कृषक द्वारा उच्च कृषि तकनीक जैसे संरक्षित खेती, सूक्ष्म

सिंचाई, मलिन्य, सौर ऊर्जा पंप, ड्रोन, फर्टिगेशन, ऑटोमेशन, फार्म पॉड, डिग्री अपनाई जा रही हो। कृषक का चयन कृषि विभाग द्वारा जिलाभाष्य स्तरीय पुरस्कार हेतु चयन किया गया हो, कृषक, पंचायती राज संस्था, सहकारी संस्था, वाटर यूजर एसोसिएशन, कृषि मंडी आदि में विगत 10 वर्षों में किसी पद पर रहा हो या एकपीओ का सदस्य हो, कृषक की उम्र 50 वर्ष से कम हो, कृषक के विरुद्ध पूर्व वर्तमान में संज्ञेय अपराध के प्रकरण लंबित न हो, कम से कम माध्यमिक स्तर ही शैक्षणिक योग्यता धारक हो, कृषक के पास वैध पासपोर्ट हो। उन्होंने बताया कि इसी प्रकार डेयरी क्षेत्र में चयनित होने वाले दुग्ध उत्पादक पशुपालक कृषक के लिए जो मापदंड तय किए गए हैं उनमें वास्तविक रूप से कम से कम 20 गायधूमस की डेयरी या 10 ऊंट या 50 भेड़-बकरी का स्वामित्व रखता हो, पिछले 10 वर्षों से डेयरी या पशुपालन पेशे से जुड़ा हो, उच्च पशुपालन डेयरी तकनीक

अपनाई जा रही हो, कृषक का चयन कृषि या पशुपालन विभाग द्वारा पशुपालन डेयरी क्षेत्र में जाना जाता हो। कृषक पंचायती राज संस्था, सहकारी संस्था, वाटर यूजर संगठन, कृषि मंडी आदि में विगत 10 वर्षों में किसी पद पर रहा हो या एकपीओ का सदस्य हो। कृषक की उम्र 45 वर्ष से कम, कृषक के विरुद्ध पूर्व वर्तमान में संज्ञेय अपराध के प्रकरण लंबित न हो, कम से कम माध्यमिक स्तर की शैक्षणिक योग्यता धारक हो तथा कृषक के पास वैध पासपोर्ट हो। उपरोक्त मापदंडों को पूरा करने वाले पात्र अपने नजदीकी ई-मित्र केन्द्र के माध्यम से राजकिसान साथी पोर्टल पर 10 सितम्बर 2024 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। कार्यक्रम से संबंधित जानकारी के लिए कृषक कृषि, उद्यान अथवा पशुपालन विभाग में संपर्क कर सकते हैं।

जिले के चिकित्सा संस्थानों में 10 से 25 हजार टेबलेट उपलब्ध

केन्द्र सरकार के आदेश के बाद राजस्थान चिकित्सा सेवा निगम लिमिटेड ने निःशुल्क दवा लिस्ट में 498 नंबर पर शामिल सर्दी, जुकाम के साथ बुखार में दी जाने वाली तीन दवाओं के कंबीनेशन सिटीजीन एचसीएल पेरसिटाडोल, फिनाइलफाइन एचसीएल पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। अब इस दवा का ना तो मानव उपयोग के लिए निर्माण किया जाएगा और ना ही इसका वितरण व विक्रय होगा। प्रदेश के सरकारी और निजी अस्पतालों, मेडिकल स्टोर्स पर यह दवा 2 सितम्बर से पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दी गई है। अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी व प्रभारी अधिकारी जिला औषधि भण्डार डूंगरपुर के डॉ विपिन मीणा ने बताया कि केन्द्र सरकार ने 156 प्रकार की कंबीनेशन की दवाओं को प्रतिबंधित किया है। जिसमें से राजस्थान में निःशुल्क दवा योजना की लिस्ट में 498 नंबर की दवा सिटीजीन एचसीएल, पेरसिटाडोल, फिनाइलफाइन एचसीएल टेबलेट (सेटीरिजिन 5 एमजी, फिनाइलफाइन 10 एमजी) एंड परोसिटामोल 325 एमजी टेबलेट) को आवश्यक दवा सूची से हटा दी है।

संस्था प्रधानों की दो दिवसीय ब्लॉक स्तरीय वाकपीठ सम्पन्न राज्य सरकार की अनूठी पहल: उद्यानिकी की उन्नत

संजीवनी टुडे
एसी वाकपीठ हमारे हौसलों में दम भरती है: भारद्वाज

उदयपुर, 4 सितंबर। उदयपुर शहर व गिर्वा के संस्था प्रधानों की दो दिवसीय ब्लॉक स्तरीय वाकपीठ बुधवार को राजकीय फतेह उच्च माध्यमिक विद्यालय में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कुंज बिहारी भारद्वाज की अध्यक्षता में संपन्न हुई। वाकपीठ अध्यक्ष रघुनाथ पालीवाल ने बताया कि इस अवसर पर संयुक्त निदेशक महेंद्र जैन, जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक लोकेश भारती, जिला शिक्षा अधिकारी प्राथमिक शिक्षा नैनिहाल सिंह, सहायक निदेशक दिनेश बंसल का सान्निध्य प्राप्त हुआ। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कुंज बिहारी भारद्वाज ने प्रशस्तिपत्र सत्र में प्रवेशोत्सव, सर्वे, नामांकन बढ़ाने, उपचारमय शिक्षण, रीड इथोन (प्रखर), वर्कबुक का वितरण, शालादर्पण, स्वच्छता पखवाड़ा, नवोदय विद्यालय, इंस्पायर अवाई, विद्यालय की भौतिक सुविधाएं, पोषाहार, कहा कि इस प्रकार की वाकपीठ हमारे हौसलों में दम भरती है, दुगुनी ऊर्जा से हम अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करते हैं। संयुक्त निदेशक महेंद्र जैन ने कहा कि हमारे संस्था प्रधान समर्पण भाव से कार्य कर रहे



हैं। हमें समुदाय के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करने हेतु उनसे वार्तालाप करते रहना चाहिए। जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक लोकेश भारती ने विभागीय कार्य को कुशलता से करना चाहिए, हमारे कार्य की मेहनत परिणाम में झलकती है। जिला शिक्षा अधिकारी प्राथमिक नैनिहाल सिंह ने कहा कि भविष्य निर्माताओं को राष्ट्र सेवा हेतु तत्पर रहना चाहिए। कार्यक्रम में दिर्संबर माह तक सेवानिवृत्त होने वाले प्रधानाचार्यों रघुनाथ पालीवाल, शंकर लाल बारबर, आलोक शेखर शर्मा, जगदीश पाठक, अरुणा छाजेड़, उर्मिला त्रिवेदी, रेणु शर्मा, दर्शना जैन का सम्मान कर अभिनंदन पत्र प्रदान किए गए। साथ ही विद्यालयों में कक्षा 10 व 12 का

राज्य सरकार की अनूठी पहल: उद्यानिकी की उन्नत प्रविधियों से होगा काश्तकारों का कल्याण

संजीवनी टुडे
कृषकों को मिलेगा विदेश में प्रशिक्षण का अवसर, आवेदन आमंत्रित
उदयपुर। कृषि व उद्यानिकी में उन्नत प्रविधियों के माध्यम से कृषक कल्याण का सपना सजोने वाले मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा कई नवाचारों को मूर्त रूप दिया जा रहा है। इसी श्रृंखला में राज्य सरकार की बजट घोषणा के तहत उद्यान निदेशालय की ओर से किसानों की क्षमता वृद्धि के लिए नॉलेज एनहांसमेंट प्रोग्राम अंतर्गत युवा कृषकों को विदेश में प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। उद्यान विभाग के उपनिदेशक डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए ऑनलाइन आवेदन 10 सितंबर तक राज किसान साथी पोर्टल पर उपनिदेशक डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा ने आमंत्रित किये गये हैं। उच्च कृषि तकनीकी की संभावनाओं के मद्देनजर सभागवार लक्ष्य निर्धारित कर निर्धारित मापदंडों के आधार पर कृषि क्षेत्र वाले

कृषक, दुग्ध उत्पादक व पशुपालन राज किसान साथी पोर्टल पर आवेदन कर सकते हैं। उपनिदेशक ने बताया कि इस प्रक्रिया के तहत कम से कम 1 हेक्टेयर भूमि स्वामित्व वाला कृषक जो 10 वर्षों से लगातार खेती करता हो और उच्च कृषि तकनीकी अपनाने, कृषि विभाग द्वारा जिला या राज्य स्तर पर पुरस्कृत, कृषक पंचायती राज संस्था, सहकारी संस्था, वाटर यूजर एसोसिएशन, कृषि मंडी आदि में विगत 10 वर्षों से किसी पद पर रहा हो या एकपीओ का सदस्य हो, उम्र 50 वर्ष से कम हो, कम से कम माध्यमिक स्तर की शैक्षणिक योग्यता व वैध पासपोर्ट की उपलब्धता वाले कृषक आवेदन कर सकते हैं। उच्च कृषि तकनीकी की संभावनाओं के मद्देनजर सभागवार लक्ष्य निर्धारित कर निर्धारित मापदंडों के आधार पर कृषि क्षेत्र वाले

28 को होगा राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन: राजीनामे से निपटेंगे मामले



संजीवनी टुडे
राजसमंद राजसमंद में 28 सितम्बर को नाथद्वारा मुख्यालय पर राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। इसमें कई मामलों का राजीनामे से निपटारा किया जाएगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अध्यक्ष एवं जिला एवं सेशन न्यायाधीश राघवेंद्र काठवाल के निर्देशानुसार यह आयोजन होगा। लोक अदालत में शमनीय ढाण्डक अपराध, धारा 138 परकाम्य विलेख अधिनियम के अंतर्गत प्रकरण, धन वसूली के मामले, पारिवारिक विवाद (तलाक को छोड़कर), एमएसीटी प्रकरण, श्रम एवं नियोजन संबंधी विवाद, अन्य सिविल मामले (जिनमें ओ.डी.आर. से निस्तारा संभव हो), बैंक, बीएसएफएल, विद्युत विभाग, जलदाय विभाग आदि से संबंधित प्रिलिटिगेशन मामलों का निस्तारण किया जाएगा। राष्ट्रीय लोक अदालत के सफल आयोजन के लिए

अध्यक्ष तालुका विधिक सेवा समिति, अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश नाथद्वारा प्रवीण कुमार मिश्रा की अध्यक्षता में न्यायिक अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में वरिष्ठ सिविल न्यायाधीश एवं अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नाथद्वारा प्रेम प्रकाश जीनगर, सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट नाथद्वारा संजू चौधरी, विशिष्ट न्यायिक मजिस्ट्रेट (एन.आई) एन.एस. नाथद्वारा पीयूष कुमार मेडुतिरा उपस्थित रहे। मिश्रा ने बताया कि 28 सितम्बर को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। इसके सफल आयोजन हेतु अधिक से अधिक संख्या में प्रकरणों को राष्ट्रीय लोक अदालत में रखा जाएगा। प्रकरणों में पूर्व सूचना जारी कर, प्रि-काउंसिलिंग के माध्यम से राजीनामे के द्वारा मामलों का निस्तारण करने का प्रयास किया जाएगा।

नाथुवास तालाब को लेकर विधायक विश्वराज सिंह मेवाड़ की चिंता हुई सही साबित

संजीवनी टुडे
राजसमंद। नाथुवास तालाब को लेकर कुछ माह पहले नाथद्वारा विधायक विश्वराज सिंह मेवाड़ द्वारा विधानसभा में व्यक्त की गई चिंता अब सही साबित हो रही है। उन्होंने विधानसभा में मुद्दा उठाते हुए कहा था कि बड़े तालाब हो या छोटे तालाब हों, उनकी आज दुर्दशा हो गई है। विशेष रूप से नाथुवास तालाब का मुद्दा उठाते हुए कहा था कि नाथद्वारा स्थित नाथुवास तालाब की निकासी को ही बंद कर दिया गया। संबंधित विभाग को निकासी की मरम्मत करनी चाहिए थी ताकि यहाँ अनावश्यक जल भरण न हो, लेकिन मरम्मत के बजाय निकासी को ही चुन कर बंद कर दिया था। इसके साथ ही नाथुवास तालाब के जल भराव क्षेत्र में लोगों ने मकान की बना लिए। नाथद्वारा विधायक विश्वराज सिंह मेवाड़ ने कहा है कि आज इस तालाब की सुरक्षा के नाम पर कोई पुख्ता तैयारी नहीं है, इस तालाब की पाल अंगर फूटी तो पूरा नगर प्रभावित हो सकता है। आज यह तालाब पूरा भरने में से सिर्फ 4 इंच बाकी है, यह तालाब आने वाले वक्त में खतरे की घंटी बन सकता है। इस तालाब के भराव क्षेत्र में स्थित मकानों के निवासी अब परेशान हो रहे हैं क्योंकि पानी की निकासी

किस स्तर पर किया जाता है? विवरण सदन की मेज पर रखे। साथ ही उन्होंने यह भी पूछा कि क्या यह सही है कि जल संसाधन विभाग के नियंत्रणधीन बांधों एवं तालाबों का निरीक्षण मानसून पूर्व एवं मानसून पश्चात किया जाकर सुरक्षा प्रमाण पत्र जारी किया जाता है? यदि हाँ, तो विधान सभा क्षेत्र नाथद्वारा व उदयपुर के बांधों एवं तालाबों में वर्ष 2023 व 2024 में किए गए निरीक्षण के सुरक्षा प्रमाण पत्र की प्रति सदन की मेज पर रखे। जल स्रोतों के संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास रहे हैं विधायक नाथद्वारा विधायक श्री मेवाड़ का यह प्रयास है कि जल स्रोतों का संरक्षण किया जा सके। उनका सदैव यह प्रयास रहा है कि जल स्रोतों का संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके। उनके नेतृत्व में जल संरक्षण को प्राथमिकता दी जा रही है, जिससे क्षेत्र के पारंपरिक जल स्रोतों की रक्षा की जा सके और जल की निरंतर आपूर्ति बनी रहे। श्री मेवाड़ जल संरक्षण की विभिन्न योजनाओं और अभियानों को सक्रिय रूप से समर्थन देकर यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि स्थानीय निवासियों को जल की कमी का सामना न करना पड़े। उन्होंने जल स्रोतों के पुनर्वास और संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाए हैं।

उदयपुर मे ए-हेल्प ट्रेनिंग का आगाज, पशुपालकों को मिलेगी काफी राहत

पशु सखी के जरिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करना लक्ष्य

संजीवनी टुडे
उदयपुर। ग्रामीण अंचल की अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के लिये केंद्रीय पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य पालन मंत्रालय और ग्रामीण विकास मंत्रालय की संयुक्त पहल से भारत सरकार की वित्त पोषित ए-हेल्प (एकीडेटेड एजेंट फॉर हेल्थ एण्ड एक्सटेंशन ऑफ लाइवस्टॉक प्रोडक्शन) योजना की शुरुआत उदयपुर में बुधवार को हुई। उदयपुर में इस प्रशिक्षण का शुभारंभ कृषि विज्ञान केंद्र बड़ागाँव के प्रभारी डॉ प्रफुल भटनागर एवं पशुपालन विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. शरद अरोड़ा ने किया गया। इस प्रशिक्षण में उदयपुर जिले की 25 महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस ए-हेल्प कार्यक्रम में डॉ शैलेंद्र कुमार शुक्ला, डॉ सुरेश शर्मा, डॉ सुभाष चन्द्र, डॉ योगेश बरोलिया तथा श्री सचिन वैश्य मास्ट ट्रेनर रहेंगे। डॉ. अरोड़ा ने बताया कि पहला प्रशिक्षण शिविर बुधवार को कृषि विज्ञान केंद्र बड़ागाँव में शुरू हुआ जो 20 सितंबर तक चलेगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं को मान्यता प्राप्त एजेंट के रूप में शामिल करके सशक्त बनाना है। ए-हेल्प की भूमिका राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम में एफएमडी एवं बुसेला टीकाकरण, पीपीआर उन्मूलन, प्लास्मिक स्वाइन



फीवर नियंत्रण और राष्ट्रीय गोकुल मिशन में कुत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम में महत्वपूर्ण होगी। इसी प्रकार डेयरी गतिविधियों का प्रसार एवं क्रियान्वयन, गौ-भैस वंशीय पशुओं को कान में टैग लगाना, किसान उत्पादक संगठनों को पशुपालन में उद्यमिता विकास के लिये प्रोत्साहित करने, विभिन्न विभागीय योजनाओं के क्रियान्वयन में सहयोग और निचले स्तर तक पशुपालकों को जानकारी उपलब्ध कराने में ए-हेल्प की भूमिका महत्वपूर्ण रहेगी। डॉ अरोड़ा ने इस योजना

पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस योजना के लिए हर गांव से एक महिला का चयन कर स्टेट लेवल पर उसकी ट्रेनिंग कराई जाएगी। 16 दिन की ट्रेनिंग के बाद इनका एक मौखिक और लिखित परीक्षा होगा। परीक्षा पास आउट करने के बाद इन पशु सखीयों को ए-हेल्प कार्यक्रम के रूप में जाना जाने लगेगा। मुख्य अतिथि डॉ प्रफुल भटनागर ने इस अवसर पर कहा कि ए-हेल्प कार्यक्रमों को जानकारी उपलब्ध कराने में ए-हेल्प की भूमिका महत्वपूर्ण रहेगी। इससे पशुपालन

गतिविधियों का अमल आसान होगा तथा दुग्ध उत्पादन पर भी सीधा असर पड़ेगा। इसके अलावा पशु सखी चारा उत्पादन के लिए पशुपालकों को प्रोत्साहित भी करेंगी, जिससे वो चारे की पूर्ति के लिए आत्मनिर्भर बनें। प्रत्येक ए-हेल्प या पशु सखी को फरस्ट-एड किट भी दी जाएगी, जिससे वो पशुपालकों की प्रारंभिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। जिससे पशुपालकों को फायदा मिलने के साथ ही मातृ शक्तियों को रोजगार भी मिलेगा।

उल्लेखनीय है कि राजस्थान सरकार के पशुपालन विभाग की ओर से 1 जुलाई 2024 से इस योजना का शुभारंभ पशुपालन, डेयरी एवं वैद्यस्थान विभाग के कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत द्वारा किया गया। इस योजना के तहत पशुपालन और ग्रामीण विकास विभाग, राजस्थान सरकार की ओर से महिला शक्ति को प्रशिक्षण दिया जाएगा। विहार, गुजरात, जम्मू कश्मीर, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड और झारखंड के बाद इस योजना को शुरू करने वाला राजस्थान आठवां राज्य है। ए-हेल्प योजना के तहत राज सरकार पहले चरण में करीब दो हजार चयनित महिलाओं को पशुपालन और ग्रामीण विकास विभाग की ओर से ट्रेनिंग दी जाएगी।

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर में दो दिवसीय युवा नाट्य उत्सव

संजीवनी टुडे
जयपुर-उदयपुर। जवाहर कला केन्द्र, जयपुर और पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में उदयपुर में दो दिवसीय युवा नाट्य उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। उत्सव में जवाहर कला केन्द्र की युवा नाट्य निर्देशक अनुदान योजना 2023-24 के अंतर्गत चयनित युवा निर्देशकों के नाटक का मंचन पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर के दर्पण सभागार में किया जाएगा। 7 सितंबर को सायं सात बजे देशराज गुर्जर के निर्देशन में 'गोरधन के जूते' नाटक होगा। वहीं 8 सितंबर को सायं सात बजे अनुराग सिंह राठौड़ के निर्देशन में वरिष्ठ साहित्यकार मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी पर आधारित 'कठपुतलियां' नाटक होगा। कला, साहित्य, संस्कृति, पर्यटन एवं पुरातत्व विभाग की प्रमुख शासन सचिव श्रीमती गायत्री राठौड़ ने उत्सव के पोस्टर का विमोचन किया। इस दौरान पॉर्टल विभाग निदेशक श्रीमती रश्मि शर्मा एवं संयुक्त निदेशक श्रीमती पुनीता सिंह, जेकेके की अतिरिक्त महानिदेशक सुश्री प्रियंका जोधावत, सहायक निदेशक श्री केन्द्र लतीफ उस्ता मौजूद रहे। जवाहर कला केन्द्र की अतिरिक्त महानिदेशक सुश्री प्रियंका जोधावत ने बताया कि केन्द्र के आउटरीच प्रोग्राम के तहत केन्द्र की ओर से तैयार नाटक उदयपुर ले जाए जा रहे हैं। इससे युवा कलाकारों को मंच मिलेगा।

सम्पादक की कलम से....

सम्पादकीय

डिफॉल्टर्स के नाम सार्वजनिक होने से ही रुकेगी बैंकों के साथ धोखाधड़ी



आरबीआई अधिनियम 1934 की धारा 45 सी तथा 45 ई के तहत ग्राहकों के कर्ज से जुड़ी सूचना को गोपनीय रखने का प्रावधान है और इसे सार्वजनिक नहीं किया जा सकता है। अप्रैल, 2019 में सुप्रीम कोर्ट ने एक मामले में भारतीय रिजर्व बैंक के इस तर्क को खारिज कर दिया था कि आरबीआई डिफॉल्टर्स के नाम सार्वजनिक नहीं कर सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने आरबीआई को निर्देशित किया था कि वह डिफॉल्टर्स के नाम और उनकी सूचना सार्वजनिक नहीं करने के प्रावधानों को निरस्त करे। इसके पूर्व भी वर्ष 2015 में सुप्रीम कोर्ट ने इसी तरह का आदेश दिया था कि बैंकों के कर्ज नहीं लौटाने वाले डिफॉल्टर्स के नाम छिपाने वाले प्रावधानों को हटायें।

सुप्रीम कोर्ट ने भारतीय रिजर्व बैंक को चेतावनी देते हुए कहा था कि वह उनके आदेश को गंभीरता से नहीं ले रहा है। जानबूझकर बैंक ऋण नहीं चुकाने वालों की सूची का खुलासा नहीं करने पर केंद्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) ने आरबीआई के पूर्व गवर्नर उजित पटेल को कारण बताओ नोटिस जारी किया था। सुप्रीम कोर्ट का आदेश था कि रिजर्व बैंक 50 करोड़ रुपये और इससे अधिक का ऋण लेने और जानबूझकर उसे नहीं चुकाने वालों के नाम सार्वजनिक करे। रिजर्व बैंक ने सरकार के आर्थिक हित, वाणिज्यिक गोपनीयता और सूचना को अमानत के रूप में रखने के अपने कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए डिफॉल्टर्स के नामों की सूची को सार्वजनिक करने से इनकार कर दिया था। मोदी सरकार के कार्यकाल में दबाव वाले कर्ज का पारदर्शी तरीके से पहचान का काम हुआ है, पहले उस पर पर्दा डाला हुआ था।

रिजर्व बैंक ने देश में ऋण लेने वाले सभी व्यक्तियों, इकाइयों का ब्योरा एक जगह उपलब्ध कराने के लिए डिजिटल सार्वजनिक साख पंजीक (पीसीआर) स्थापित करने का कदम उठाया है। इसमें जानबूझकर कर्ज नहीं लौटाने वालों के नाम और कर्ज चुकाने में अनियमितताओं से संबंधित लंबित कानूनी मामलों की जानकारी रखी जाएगी। इस कदम का मकसद बाजार में कर्ज की धंधली रोकना है। पीसीआर में सेबी, माल एवं सेवा कर नेट वर्क (जीएस्टीएन) तथा इनसोल्वेंसी एवं बैंकरप्सी बोर्ड (आईबीसी) से प्राप्त सूचनाएँ भी शामिल की जाएंगी, जिससे बैंकों और वित्तीय संस्थाओं को कर्जदारों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त हो सके। अभी तक जांच एजेंसियाँ आर्थिक अपराध और बैंक धोखाधड़ी के मामलों में समय-समय पर बैंकों से जानाकरियां लेती रही हैं, लेकिन अपनी जानकारी बैंकों के साथ साझा नहीं करती थीं। सरकार ने अब सभी जांच एजेंसियों को दिशा-निर्देश जारी कर दिए हैं कि वे आर्थिक अपराध और बैंक धोखाधड़ी के लिए बैंकों के साथ अपनी जानकारी साझा करें। जांच एजेंसियों और बैंकों के बीच जानकारी साझा होने से बैंक उन व्यक्तियों के खिलाफ सावधान हो जाएँगे जिनके खिलाफ आर्थिक अपराध और धोखाधड़ी करने के आरोप लगे हैं।

बैंक बहुत बार ऐसे लोगों को ऋण दे देता है जिनके ऋण खाते किसी अन्य बैंक में अनियमित हैं। चूककर्ताओं के नाम सार्वजनिक नहीं होने से पुराना चूककर्ता ऋणी नये नाम से या तो उसी बैंक की अन्य शाखा से से या दूसरी बैंक से ऋण प्राप्त करने में सफल हो जाता है। चूककर्ता ऋणी अपनी सहायक कंपनियों (सिस्टर कन्सर्न) के नाम से लोन लेने में सफलता प्राप्त कर लेता है। बैंक एनपीए खातों की सूची और न्यायालय में लगे हुए मुकदमों के प्रकरणों की सूची सीआईसी (क्रेडिट इन्फॉर्मेशन कंपनीज) अर्थात सिबिल, इक्विफ्रेक्स क्रेडिट इन्फॉर्मेशन सर्विसेस, एक्सपेरियन क्रेडिट इन्फॉर्मेशन कंपनी, सीआरआईएफ हाई मार्क क्रेडिट इन्फॉर्मेशन सर्विसेस को समय पर नहीं देती है जिसके कारण अन्य बैंक ऐसे खराब खातों के ऋणी को वित्त सुविधाएँ प्रदान कर देते हैं और कुछ ही समय में ऐसे नये ऋण खाते उस अन्य बैंक में भी एनपीए में तब्दील हो जाते हैं। इस प्रकार बैंक उद्योग में एनपीए दिनों-दिन बढ़ता जाता है। एक ही व्यक्ति अलग-अलग बैंकों से कई बार आसानी से कर्ज ले लेता है। बैंक एक दूसरे से संपर्क में नहीं रहते हैं। बैंक का अन्य वित्तीय संस्थाओं से समन्वय नहीं रहता है और तो और बैंकों में आपस में ही समन्वय नहीं रहता है, इसी कारण जानबूझकर चूक करने वाले ऋणी इसका फायदा उठाकर बैंकों को बहुत बड़ा चुका लगा देते हैं। अधिक बैंक होने से बैंकों में आपसी प्रतिस्पर्धा का फायदा चूककर्ता ऋणी आसानी से उठा लेते हैं। वे एक बैंक के अपने अनियमित खातों को नियमित करने के लिए दूसरे बैंक से अपनी नई फर्जी कंपनी बनाकर ऋण लेते हैं और फिर दूसरे बैंक के ऋण खातों को ठीक करने के लिए तीसरे बैंक से एक और नई फर्जी कंपनी बनाकर ऋण लेते हैं।

आज का राशिकफल

यह राशिकफल जन्म राशि पर आधारित है। व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि पर थे, वही उसकी जन्म राशि होती है। यदि राशि की जानकारी आपको नहीं है तो अपने नामाक्षर से राशिकफल देखें।

	मेघ (वृ, च, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ): आज भाग्य से कोई नया प्रस्ताव मिल सकता है। सरकारी काम आसानी से बन जाएंगे। अधिकारी सहयोग करेंगे। किसी चैरिटी आदि में धन खर्च करेंगे। मित्रों के साथ पार्टी में जा सकते हैं।
	वृषभ (ई,उ,ए,ओ,वा,ती,वृ,वे,वो): सुख-सुविधाओं पर खर्च होगा। व्यक्तिगत मामलों में गलतफहमी को जन्म देने वाली कोई बात हो सकती है। परिवार के साथ पार्टी में जा सकते हैं। कोई नया प्रस्ताव यदि आज मिलता है।
	मिथुन (क,की,कू,घ,ड,छ,के,को,ह): कार्यों को मन लगाकर पूरा करेंगे। लोगों को बढ़ते प्रभाव से कुछ लोगों को परेशानी हो सकती है। आज की गई मेहनत का पूरा फल नहीं मिलेगा। व्यक्तिगत मामलों को सावधानी से हल करें।
	कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो): किसी योजना का क्रियान्वयन हो जाएगा। अशुभ काम भी किसी न किसी सहयोग से आज पूरे हो जाएंगे। धैर्यपूर्वक निर्णय लेने पड़ेंगे। भाग-दौड़ बनी रहेगी, परंतु यात्रा करना आज ठीक नहीं रहेगा।
	सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे): परिवार के बड़े सदस्यों की आज मान कर चलेंगे तो फायदे में रहेंगे। लाभ के एक से अधिक अवसर सामने होंगे। चाहा गया सहयोग नहीं मिलने से काम खुद ही पूरे करने पड़ेंगे। बड़े भाई से लाभ होगा।
	कन्या (टो, पा, पी, पृ, घ, ष, ठ, पे, पो): आज घर और बाहर दोनों जगह आपके काम की सराहना होगी। काम के घंटे बढ़ जाएंगे अतः पिछले छूटें कामों को पहले पूरा कर लें। अधिकारी वर्ग प्रसन्न रहेगा। विद्यार्थी वर्ग लाभ में रहेगा।
	तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते): आज काम बनने में थोड़ी असुविधा हो सकती है। विरोधियों से सावधान रहना होगा। प्रोपर्टी के खरीदने या बेचने से संबंधी बात हो सकती है। पुराने मित्रों से मुलाकात होने की संभावना है।
	वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू): व्यावसायिक कार्यों का विस्तार करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ेगा। सहयोग मिल जाने से थोड़ी आसानी हो जाएगी। व्यक्तिगत संबंधों में सौहार्द की भावना बढ़ने से मन प्रसन्न होगा।
	धनु (ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, दा, भे): आज का दिन महत्वपूर्ण काम करने के लिए नहीं है। निजी समस्याओं को अपने ऊपर हावी न होने दें। परिवार के साथ समय बिताना आवश्यक है, चाहें तो कहीं आउटिंग के लिए जा सकते हैं।
	मकर (मो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी): आज स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा, परंतु काम फिर भी आसानी से बन जाएंगे। लाभ की कोई नई योजना बनाकर उस पर अमल करेंगे। मित्र विशेष सहयोगी बनकर सामने आएंगे।
	कुंभ (गु, गे, गो, सा, सी, यू, से, सो, दा): आज घर की बुजुर्ग स्त्री की सलाह काम आएगी, महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय उसकी नजर अंदाज ना करें। यात्रा करना हित में नहीं रहेगा, बहुत जरूरी हो तो पहले मंदिर जाएँ फिर यात्रा करें।
	मीन (दी, दू, ध, झ, ज, दे, दो, वा, वी): आज योग्यता दिखाने का उचित अवसर मिलेगा। लाभ देने वाली छोटी यात्री का संभावना है। बड़ी प्रतिस्पर्धा में भी विजयी होंगे। वाहन धोमी गति में चलाएँ, अन्य कार्यों में भी जल्दबाजी ना करें।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में हर साल लगभग आठ लाख लोग आत्महत्या करते हैं। जिनमें से 21 फीसदी आत्महत्याएं भारत में होती है। हमारे देश में शायद ही कोई दिन ऐसा बीताता होगा जब किसी न किसी इलाके से गरीबी, भुखमरी, कुपोषण, बेरोजगारी, कर्ज जैसी तमाम आर्थिक तथा अन्य सामाजिक दुःखियों से परेशान लोगों के आत्महत्या करने की खबरें न आती हों। देश में हर चार मिनट में एक आत्महत्या की जाती है। 2018 में पारित हुए मेंटल हेल्थ केयर एक्ट 2017 के तहत भारत में आत्महत्या के अपराधीकरण का कानून खत्म करते हुए मानसिक बीमारियों से जुड़ रहे लोगों को मुफ्त मदद का प्रावधान किया गया है। इस नए कानून के तहत आत्महत्या का प्रयास करने वाले किसी भी व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के मदद पहुंचाना, इलाज करवाना और पुनर्वास देना सरकार की जिम्मेदारी होगी। भारत के साथ-साथ पूरे विश्व में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ रहे लोगों की संख्या बढ़ने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि इस मामले में अभी तक विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से कोई ठोस बयान जारी नहीं किया गया है। लेकिन विश्व के अलग-अलग हिस्सों में हो रहे आत्महत्याओं के बढ़ते मामलों पर तुरंत संज्ञान लेने की जरूरत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट खुलासा करती है कि विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों के लोग अधिक आत्महत्या कर रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि विकसित देशों में महिलाओं के मुकाबले पुरुषों में आत्महत्या की दर अधिक है। परन्तु विकासशील देशों में महिलाओं की आत्महत्या की दर अधिक पाई गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े यह भी खुलासा करते हैं कि आत्महत्या के मामले में भारत की स्थिति भी चिंताजनक है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के तुलनात्मक आंकड़े बताते हैं कि भारत में आत्महत्या की दर विश्व आत्महत्या दर के मुकाबले बढ़ी है। भारत में पिछले दो दशकों की आत्महत्या दर में एक लाख लोगों पर 2.5 फीसद की वृद्धि हुई है। आज भारत में 37.8 फीसद आत्महत्या करने वाले लोग 30 वर्ष से भी कम उम्र के हैं। दूसरी ओर 44 वर्ष तक के लोगों में आत्महत्या की दर 71 फीसद तक बढ़ी है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार भारत में 2019 में आत्महत्या करने से रोजाना 381 मौतें हुई व पूरे साल में कुल 1 लाख 39 हजार 123 लोग मरे। 2018 में 1 लाख 34 हजार 516 और 2017 एक लाख 29 हजार 887 लोगों ने आत्म हत्या की थी। 2018 की तुलना में 2019 के दौरान देश में आत्महत्याओं में 3 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। पिछले वर्ष देश में फांसी लगाकर आत्महत्या करने वाले 53.6 प्रतिशत लोग थे। वहीं जहर खाकर 25 प्रतिशत, पानी में डूब कर 5.2 प्रतिशत लोगों ने आत्महत्या की थी। आत्महत्या करने वालों में 70.2 प्रतिशत पुरुष और 29 प्रतिशत महिलाएँ

आत्महत्याओं पर लगे लगाम



विवार बिन्दु

सरकार को आत्महत्या के लिए प्रेरित करने वाले आर्थिक-सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारणों की गहराई से पड़ताल करनी चाहिये और अपनी प्राथमिक जिम्मेदारी के तौर पर ऐसे उपाय करें कि लोग अपनी जीवनलीला समाप्त करने का विचार ही दिमाग में न लाए। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट में सरकारों को सलाह दी गई है कि आत्महत्या का मीडिया ट्रायल नहीं हो। देश में अल्कोहल को लेकर ठोस नीति बनाई जाए। आत्महत्या के संसाधनों पर रोक लगाते हुए आत्महत्या के प्रयास करने वालों की उचित देखभाल की जाए।

श्री. देश में सबसे ज्यादा महाराष्ट्र में 18 हजार 916 लोगों द्वारा आत्महत्याओं की गयी थी। इसके बाद तमिलनाडु में 13,493, पश्चिम बंगाल में 12,665, मध्य प्रदेश में 12,457 और कर्नाटक में 11,288 लोगों ने आत्महत्या की थी। देश में दर्ज कुल आत्महत्याओं का 49.5 प्रतिशत हिस्सा इन पांच राज्यों में था। शेष 50.5 प्रतिशत आत्महत्याओं की रिपोर्ट देश के अन्य सभी प्रदेशों की थी। देश के कई हिस्सों में गरीब किसानों के द्वारा की जाने वाली खुदकुशी की घटनाएँ भी किसी से छिपी नहीं हैं। महाराष्ट्र का विदर्भ क्षेत्र तो इसके लिए कुख्यात है। देश के अन्य हिस्सों में कर्ज में डूबे गरीब व निर्धन किसान भी आत्महत्या करने को मजबूर हो रहे हैं। असलियत तो यह है कि देश में किसी भी व्यक्ति द्वारा की गई आत्महत्या इस सामाजिक व्यवस्था पर एक कथार तमाचा है। देश के किसानों में आत्महत्या की प्रवृत्ति रुकने का नाम ही नहीं ले रही है। बीते वर्ष खुदकुशी के कारण देश ने 3 हजार

किसानों को खोया था। पिछले 20 सालों में हजारों किसानों ने अपना जीवन त्याग दिया। किसान जो अन्नदाता हैं। अपनी मेहनत से देश की 130 करोड़ जनसंख्या के पेट की आग बुझाता हैं। वहीं आज अपने पेट की आग नहीं बुझा पा रहे हैं। प्राकृतिक प्रकोप और ऊपर से सरकारी उदासीनता के कारण अन्नदाता दाने-दाने को मोहताज नजर आ रहे हैं। ऐसे में जब हालात बंद से बदतर हो जाते हैं तब वे मजबूरन आत्महत्या करने को मजबूर हो जाते हैं। भारत में अवसाद की बीमारी भी तेजी से पांव पसार रही है। आंकड़े बताते हैं कि वित्तगत दशकों में बदलते परिवेश, आधुनिक जीवन-शैली, तात्कालिक विफलता और बढ़ती बेरोजगारी के कारण ग्रामीण भारत के युवाओं में अवसाद के कारण आत्महत्या करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार 2019 में कुल 1,39,123 लोगों ने आत्महत्या की थी। जिसमें बेरोजगारों की संख्या 14,019 थी। जो 2018



रमेश सरकारी घणोर

शिक्षक दिवस पर विशेष: शिक्षक एक मार्गदर्शक होने के साथ साथ हमारा मित्र और सारथी भी होता है...

प्राचीन काल में एक शिक्षक को गुरु कहा जाता था। गुरु वह होता है, जो हजारों शिष्यों के जीवन को प्रकाशित करता है। आज हम जयंती मना रहे हैं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जो कि हमारे देश के दूसरे राष्ट्रपति होने के साथ साथ एक महान शिक्षक थे। उनकी जयंती पर हमारे देश में प्रत्येक वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। हमारे जीवन में शिक्षक की महत्वता को समझने के लिए कबीर दास जी का यह दोहा उचित है कि- गुरु गोविंद दोउ खड़े काके लागू पाय, बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताया। शिक्षक हमारे जीवन में एक सूत्रधार की भूमिका निभाते हैं, जो कक्षा में समूह अधिगम को बढ़ावा देते हैं। बच्चों की विभिन्न क्षमताओं को विकसित करने में उनका सहयोग करते हैं। ज्ञान, सकारात्मक मूल्यों तथा समकालीन बाधाओं को समझने और उनको दूर करने की दृष्टान्तियों को सीखाने में शिक्षक ही सहायक होते हैं। प्रत्येक छात्र के भविष्य निर्माण के साथ युवा पीढ़ी को तैयार करने की जिम्मेदारी शिक्षक ही लेते हैं। किसी भी अन्य कार्य की तुलना में शिक्षकों का कार्य इसलिपे भी महत्वपूर्ण होता है क्योंकि वह एक मार्गदर्शक के रूप में छात्र को मार्ग दिखाकर उनके उज्ज्वल भविष्य की ओर को सींचते हैं। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

के अनुसार शिक्षक छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन नहीं भरता बल्कि शिक्षक छात्र को आगामी परिस्थितियों का सामना करने हेतु तैयार करता है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम ने शिक्षक के महत्व को स्वीकारते हुए कहा है कि - अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो यह कार्य केवल तीन व्यक्ति कर सकते हैं - पिता, माता, शिक्षक अस्तु ने भी शिक्षक के सम्बन्ध में कहा है कि - जन्म देने वालों से अधिक शिक्षा देने वाले सम्मान के पात्र होते हैं क्योंकि माता पिता जन्म देते हैं लेकिन शिक्षक हमें जीना सिखाते हैं। शिक्षक एक मोमबत्ती की तरह होता है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशित करता है। कहा जाता है कि एक बच्चा, एक शिक्षक, एक पेन और एक किताब दुनिया को बदल सकते हैं। शिक्षक एक मार्गदर्शक होने के साथ साथ हमारा मित्र और सारथी भी होता है जो हमारी प्रत्येक समस्या में हमारी सहायता करता है। चाहे बात किसी देश के विकास की हो या फिर व्यक्ति के किसी व्यक्तिगत विकास की हर क्षेत्र में शिक्षक की भूमिका अहम है। जिस प्रकार किसी भी अन्य कार्य के विकास में सबसे महत्वपूर्ण उसके बीज को माना जाता है, उसी प्रकार किसी बालक के जीवन में विकास का वह बीज एक शिक्षक ही है। अंत में शिक्षक दिवस पर अपने गुरुजनों व

समस्त शिक्षकों को सम्मान देने हेतु दो लाइन लिखना चाहूँगी। जिंदगी गिरवी रखकर भी ना चुका पाएँगे इसका कर्जा, माँ ही नहीं भगवान के बराबर गुरु का भी होता है दर्जा, भगवान को भी भगवान बनने के लिए गुरु का ही ज्ञान काम आया था। माँ ने तो उंगली थामकर कहा चलो, लेकिन चलना कहा है यह गुरु ने ही सिखाया था।



लेखिका अंशु शर्मा (अध्यापिका) राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कारोड

किसान और जवान की मजबूती से ही होगा देश मजबूत

विवार बिन्दु



गनश्याम र्थपुरा

हमें, सरकार को इनका ध्यान रखना चाहिए इनका सम्मान करना चाहिए, किसानों को समय पर रियायती दर पर बीज, खाद, बिजली, ऋण उपलब्ध करवाना चाहिए।

किसान और जवान हमारे देश के दो मजबूत स्तंभ हैं, कहा भी गया है (जय जवान जय किसान), जिनको हम देश की रीढ़ या आधार भी कहे तो कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन आज दोनों की ही स्थिति ठीक नहीं है, किसान और जवान अक्सर अपनी समस्याओं से धिरेकर आत्महत्या करने लगे हैं, ये हमारे लिए पूरे देश के लिए बड़े ही शर्म की बात है, जबकि सब जानते हैं कि जवान और किसान के बिना हमारा कोई अस्तित्व नहीं है, अगर ये अपना काम छोड़ दे तो हम वापस गुलाम बन जाएंगे, भूखे मर जाएंगे, हमारा देश कृषि प्रधान देश है जहाँ कि कम से कम 70% जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खेती से अपना जीवन यापन करती है, देश का किसान अन्नदाता हमारे देश की रीढ़ है, नीव है जिस पर हमारे देश का आधार टिका है, जो हमें सर्दी गर्मी बरसात सहकर अन्न उपजाता है, जिससे हम सभी का पेट भरता है, लेकिन उसे आज बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, बह उपेक्षित हैं, अपनी मांग रखने पर आज उन्हें डंडे मारे जाते हैं, पीटा जाता है अपमानित किया जाता है, ना उन्हें समय पर बिजली



मिलती है ना बीज, ना खाद मिलता है ना ऋण, ना पानी मिलता है ना कोई और सुविधा, और जैसे जैसे वो अपनी फसल पैदा कर भी लेता है तो उसे अपनी फसल का उचित दाम नहीं मिलता, ओने पोने दामों में उसे अपनी फसल बेचनी पड़ती है। कृत्रिम समस्याओं के साथ साथ किसान को प्राकृतिक समस्याओं जैसे जलज्वर आदि का भी सामना करना पड़ता है, ऐसी ही हालात हमारे देश के जवानों की हैं जिनके बाँहर पर रहने के कारण ही हम अपने घरों में आराम करते हैं, उत्सव मनाते हैं, सुख

50% माईनस और प्लस दोनों मोसमो की समय डटकर बिना अपनी जान की परवाह किए भयंकर ठंड और गर्मी में भी सीमा पर डटकर देश को हमे सुरक्षित रखते हैं, इसलिए किसान और जवान दोनों ही हमारे देश की रीढ़ हैं। नीव है जिन पर हम निर्भर हैं, पूरा देश निर्भर साथ किसान को प्राकृतिक समस्याओं जैसे बाढ़, अकाल, पाला, रोग, टिड्डा, आवाप्रा जानवर आदि का भी सामना करना पड़ता है, ऐसी ही हालात हमारे देश के जवानों की हैं जिनके बाँहर पर रहने के कारण ही हम अपने घरों में आराम करते हैं, उत्सव मनाते हैं, सुख

सुविधा भोगते हैं, लेकिन आज देश के सैनिकों का भी हाल ठीक नहीं है ना उन्हें ठीक खाना दिया जाता है, ना ठीक हथियार, ना आवागमन की ठीक सुविधा है ना मनोरंजन की और भी बहुत सी समस्याएँ हैं, वो बलोक स्तर पर कोल्ड स्टोरेज का निर्माण करवाना चाहिए जिससे किसान अपनी फसल को सुरक्षित रख सके, स्कूल, अस्पताल आदि जगहों पर भी इनको छूट मिलनी चाहिए, ऐसे ही देश के जवानों को अच्छा खाना, अच्छे हथियार, मनोरंजन के साधन, सही बेतन भत्ते, बुलेट प्रूफ जैकेट, आवागमन की सही सुविधा, छुट्टी, सम्मान देना चाहिए, मीडिया को भी किसान और सैनिकों की समस्याओं को मजबूती से उठाना चाहिए, ज्यादा से ज्यादा इनके कार्यक्रम दिखाने चाहिए, जिससे इनकी समस्याओं का हल हो, इनका सम्मान बढ़े, मै खुद भी किसानों की कई समस्याओं को लेकर 2019 में करौली कलेक्ट्री पर 10 दिवसीय धरना दे चुका हूँ, कई ज्ञापन दे चुका हूँ, पाठयक्रम में भी इन दोनों के सम्मान और वीरता भरे पाठ जोड़ने चाहिए, इनके महत्व को पढ़ाया जाना चाहिए, इनके रहन सहन, इनके काम से बच्चों को रूबरू कराना चाहिए, क्योंकि ये दोनों खुश रहेंगे तभी हम, हमारा परिवार, समाज, देश बीज, खाद, बिजली, ऋण उपलब्ध करवाना चाहिए, और फसल का उचित मूल्य दिलवाना चाहिए, फसल का मुआवजा, ग्राम पंचायत या



आज का इतिहास

05 सितम्बर की महत्वपूर्ण घटनाएँ

1984	उत्तरी पूर्व दक्षिणी कोरिया के बीच 1945 के बाद पहली बार सीमाएँ खोली गईं।
1993	भारत के महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद में भूकम्प के कारण 10,000 हजार से अधिक लोग मारे गए एवं लाखों बेघर हो गए।
2001	इस्त्रायल की आंतरिक मंत्रिपरिषद ने फ़िलिस्तीन के साथ हुए समझौते को मंजूरी दी।
2001	कांग्रेस के वरिष्ठ नेता माधव राव सिंधिया का निधन।
2002	पाकिस्तान में कटरपेंथी मुसलमानों ने एक मंदिर को तोड़ा, चीन ने भारत के साथ स्वेच्छे वार्ता को और सार्थक बनाने की इच्छा व्यक्त की।
2003	विश्वनाथन आनंद ने विश्व रैंपिट शतरंज चैम्पियनशिप जीती।
2004	चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस की 2555वीं जयंती मनाई गयी।
2007	परवेज मुशर्रफ को दुबारा बर्दी में राष्ट्रपति बनने से रोकने के लिए विपक्ष के 236 सांसदों-विधायकों ने त्यागपत्र दिया। संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत इब्राहिम गाँबरी ने विपक्षी नेता आंग सान सूकी और म्यांमार की सैनिक सरकार से मुलाकात की।
2009	प्रख्यात पार्थ गायक मन्ना डे को वर्ष 2007 प्रतिष्ठित दादा साहब फाल्के पुरस्कार के लिए चुना गया।
2010	इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने विवादित बाबरी मस्जिद मामले में जमीन को तीन हिस्सों में बाँटकर रामलला, निर्माही अखाड़े और वक्फ बोर्ड को एक-एक हिस्सा देने का फैसला सुनाया।

आया मानसून बुखार से जरा बचके

रिमझिम फुहारों के साथ बरसात का मौसम अपने साथ कई तरह की बीमारियां भी लाता है, जिनमें बुखार बड़ा कॉमन है। डेंगू के मामले भी बढ़ रहे हैं। डेंगू, टायफाइड और मलेरिया के बारे में आइए विस्तार से जानें

वया है बुखार

जब हमारे शरीर पर कोई बैक्टीरिया या वायरस हमला करता है तो शरीर अपने आप ही उसे मारने की कोशिश करता है। इसी मकसद से शरीर जब अपना टेम्प्रेच बढ़ाता है तो उसे बुखार कहा जाता है। अगर शरीर का तापमान सुबह के समय 99 डिग्री फारनहाइट से ज्यादा और शाम के वक्त 99.9 डिग्री फारनहाइट से ज्यादा है, तो बुखार माना जाता है। अब 98.4 नॉर्मल टेम्प्रेच का कॉन्सेप्ट बदल चुका है। मलेरिया और डेंगू में बुखार 101 से लेकर 103 डिग्री फारनहाइट तक पहुंच जाता है, जबकि वायरल में बुखार की रेंज को बता पाना काफी मुश्किल होता है।

खुद क्या करें

बुखार अगर 102 डिग्री तक है और कोई और खतरनाक लक्षण नहीं हैं तो मरीज की देखभाल घर पर ही कर सकते हैं। इसमें तीन चार दिन तक इंतजार कर सकते हैं। मरीज के शरीर पर सामान्य पानी की पट्टियां रखें। पट्टियां तब तक रखें, जब तक शरीर का तापमान कम न हो जाए। अगर इससे ज्यादा तापमान है तो फौरेन डॉक्टर को दिखाएं। मरीज को एसी में रख सकते हैं, तो बहुत अच्छा है, नहीं तो पंखे में रखें। कई लोग बुखार होने पर चांद ओढ़कर लेट जाते हैं और सोचते हैं कि पसीना आने से बुखार कम हो जाएगा, लेकिन इस तरह चांद ओढ़कर लेटना सही नहीं है। साफ-सफाई का पूरा ख्याल रखें। मरीज को वायरल है, तो उससे थोड़ी दूरी बनाए रखें और उसके द्वारा इस्तेमाल की गई चीजें इस्तेमाल न करें। मरीज को पूरा आराम करने दें, खासकर तेज बुखार में। आराम भी बुखार में इलाज का काम करता है। मरीज छींकने से पहले नाक और मुंह पर रुमाल रखें। इससे वायरल होने पर दूसरों में फैलेंगे नहीं।

बरतें ऐहतियात

ठंडा पानी न पीएं, मैदा और बासी खाना न खाएं। खाने में हल्दी, अजवाइन, अदरक, होंग का ज्यादा-से-ज्यादा इस्तेमाल करें। इस मौसम में पत्ते वाली सब्जियां, अरबी, फूलगोभी न खाएं। हल्का खाना खाएं, जो आसानी से पच सके। पूरी नींद लें। मिचं मसाले और तला हुआ खाना न खाएं, भूख से कम खाएं, पेट भर न खाएं। खूब पानी पीएं। छाछ, नारियल पानी, नींबू पानी आदि खूब पिएं। नाक के अंदर की तरफ सरसों का तेल लगाकर रखें। इससे तेल की चिकनाहट बाहर से बैक्टीरिया को नाक के अंदर जाने से रोकती है। खाने में हल्दी का इस्तेमाल ज्यादा करें। सुबह आधा चम्मच हल्दी पानी के साथ या रात को आधा चम्मच हल्दी एक गिलास दूध के साथ लें। लेकिन अगर आपको नजला, जुकाम या कफ आदि है तो दूध न लें। तब आप हल्दी को पानी के साथ ले सकते हैं। 8-10 तुलसी के पत्तों का रस शहद के साथ मिलाकर लें या तुलसी के 10 पत्तों को पौने गिलास पानी में उबालें, जब वह आधा रह जाए तब उस पानी को पीएं।

वया आपको अचानक सिर के किसी एक हिस्से में बेहद दर्द होता है, जो झकझोर के रखा देता है? वया इस कारण रोजमर्रा के कामों को करने में परेशानी होती है? ऐसा लगता है, मानो जब तक आराम न आ जाए, तब तक अंधेरे कमरे में लेटे रहें? दर्द के साथ चक्कर या उलटी की शिकायत भी होती है? यदि आपका जवाब हां है तो यह दर्द माइग्रेन हो सकता है। खुद से ही दर्द निवारक दवाओं द्वारा इसे रोकने से बेहतर है कि आप तुरंत किसी डॉक्टर से संपर्क करें। पिछले कुछ समय में किशोरों व युवाओं में इसके मामले तेजी से बढ़े हैं।

FEVERS



डेंगू कैसे और कब

डेंगू मादा एडीज इजिप्टी मच्छर के काटने से होता है। इन मच्छरों के शरीर पर चीते जैसी धारियां होती हैं। ये मच्छर दिन में, खासकर सुबह शरीर के निचले हिस्सों पैरों आदि पर काटते हैं। डेंगू बरसात के मौसम और उसके फौरन बाद के महीनों यानी जुलाई से अक्टूबर में सबसे ज्यादा फैलता है। काटे जाने के 3-5 दिनों के बाद मरीज में डेंगू बुखार के लक्षण दिखने लगते हैं। शरीर में बीमारी पनपने की मियाद 3 से 10 दिनों की भी हो सकती है।

डेंगू के 3 रूप

- क्लासिकल (साधारण) डेंगू बुखार
- डेंगू हैमरेजिक बुखार
- डेंगू शॉक सिंड्रोम

इन तीनों में से दूसरे और तीसरे तरह का डेंगू सबसे ज्यादा खतरनाक होता है। साधारण डेंगू बुखार अपने आप ठीक हो जाता है और इससे जान का खतरा नहीं होता लेकिन अगर किसी को डीएचएफ या डीएसएस है और उसका फौरन इलाज शुरू नहीं किया जाता तो जान जा सकती है। इसलिए यह पहचानना सबसे जरूरी है कि बुखार साधारण डेंगू है, डीएचएफ है या डीएसएस है।

बुखार कब जानलेवा

सभी बुखार जानलेवा या बहुत खतरनाक नहीं होते, लेकिन अगर डेंगू में हैमरेजिक बुखार या डेंगू शॉक सिंड्रोम हो जाए, मलेरिया दिमाग को चढ़ जाए, टायफाइड का सही इलाज न हो, प्रेगनेंसी में वायरल हेपेटाइटिस या मेनिंजाइटिस हो जाए तो खतरनाक साबित हो सकते हैं। बच्चों का इम्यून सिस्टम कमजोर होता है इसलिए बीमारी उन्हें जल्दी जकड़ लेती है। ऐसे में उनकी बीमारी को नजरअंदाज न करें। खुले में ज्यादा रहते हैं इसलिए इन्फेक्शन होने और मच्छरों से काटे जाने का खतरा उनमें ज्यादा होता है। बच्चों को घर से बाहर पूरे कपड़े और जूते पहनाकर भेजें। मच्छरों के मौसम में बच्चों को निकर व टी-शर्ट न पहनाएं। रात में मच्छर भगाने की त्रामें लगाएं। बच्चा बहुत ज्यादा रो रहा हो, लगातार सोए जा रहा हो, बेचैन हो, उसे तेज बुखार हो, शरीर पर रेशेज हों, उलटी हो या इनमें से कोई भी लक्षण हो तो फौरेन डॉक्टर को दिखाएं।

लक्षण क्या-क्या साधारण डेंगू बुखार

ठंड लगने के बाद अचानक तेज बुखार। -सिर, मांसपेशियों और जोड़ों में दर्द -आंखों के पिछले हिस्से में दर्द होना, जो आंखों को दबाने या हिलाने से और बढ़ जाता है। बहुत ज्यादा कमजोरी लगना, भूख न लगना और जी मिचलाना। गले में हल्का-सा दर्द होना। शरीर खासकर चेहरे, गर्दन और छाती पर, लाल-गुलाबी रंग के रेशेज। क्लासिकल साधारण डेंगू बुखार करीब 5 से 7 दिन तक रहता है और मरीज ठीक हो जाता है। ज्यादातर मामलों में इसी किस्म का डेंगू बुखार होता है।

डेंगू हैमरेजिक बुखार

नाक और मसूंहों से खून आना। शौच या उलटी में खून आना। स्किन पर गहरे नीले-काले रंग के छोटे या बड़े रेशेज पड़ जाते हैं। साधारण डेंगू बुखार के लक्षणों के साथ ये लक्षण भी दिखाई दें तो वह डीएचएफ हो सकता है। ब्लड टेस्ट से इसका पता लग सकता है।

डेंगू शॉक सिंड्रोम

इस बुखार में डीएचएफ के लक्षणों के साथ-साथ 'शॉक' की अवस्था के भी कुछ लक्षण दिखाई देते हैं। जैसे- मरीज बहुत बेचैन हो जाता है और तेज बुखार के बावजूद उसकी स्किन ठंडी महसूस होती है। मरीज धीरे-धीरे होश खोने लगता है। मरीज की नाड़ी कभी तेज और कभी धीरे चलने लगती है। उसका ब्लडप्रेसर एकदम लो हो जाता है।



इलाज

अगर मरीज को साधारण डेंगू बुखार है तो उसका इलाज व देखभाल घर पर की जा सकती है। अगर बुखार 102 डिग्री फारनहाइट से ज्यादा है तो मरीज के शरीर पर पानी की पट्टियां रखें। सामान्य रूप से खाना देना जारी रखें। बुखार की हालत में शरीर को और ज्यादा खाने की जरूरत होती है। मरीज में DSS या DHF का एक भी लक्षण दिखाई दे तो उसे जल्दी-से-जल्दी डॉक्टर के पास ले जाएं। DSS और DHF बुखार में प्लेटलेट्स कम हो जाते हैं, जिससे शरीर के जरूरी हिस्से प्रभावित हो सकते हैं। डेंगू बुखार के हर मरीज को प्लेटलेट्स बढ़ाने की जरूरत नहीं होती, सिर्फ डेंगू हैमरेजिक और डेंगू शॉक सिंड्रोम बुखार में ही जरूरत पड़ने पर प्लेटलेट्स चढ़ाई जाती हैं। अगर सही समय पर इलाज शुरू कर दिया जाए तो DSS और DHF का पूरा इलाज मुमकिन है। इलाज कराने और हॉस्पिटल से डिस्चार्ज होने के बाद मरीज को थोड़ी कमजोरी रहती है, जो 10 दिन में ठीक हो जाती है। पूरी तरह स्वस्थ होने में मरीज को 10 दिन लगते हैं।

एलोपैथी में इलाज

इसकी दवाई लक्षण देखकर और इसकी डंडी मिलती है तो चार इंच प्लेटलेट्स का ब्लड टेस्ट की डंडी लें), दो काली कराने के बाद ही दी मिचं, तुलसी के पांच पत्ते और आयुर्वेद: आयुर्वेद अदरक मिलाकर में इसकी कोई पेटेंट दवा नहीं है, पानी में उबालकर काढ़ा लेकिन डेंगू न हो, बनाएं और 5 इसके लिए यह दिन तक लें। दिन नुस्खा अपना सकते में दो बार, सुबह हैं। एक कप पानी में एक नाश्ते के बाद और रात चम्मच गिलोय का रस (अगर में डिनर से पहले लें।

कौन-से टेस्ट

अगर तेज बुखार हो, जाँइट्स में तेज दर्द हो या शरीर पर रेशेज हों तो पहले दिन ही डेंगू का टेस्ट कराएं। लक्षण नहीं हैं, पर तेज बुखार है तो भी एक-दो दिन बाद फिजिशन के पास जाएं। शक होने पर डॉक्टर डेंगू की जांच कराएंगे। डेंगू की जांच के लिए शुरूआत में एंटीजन ब्लड टेस्ट किया जाता है। इस टेस्ट में डेंगू शुरू में ज्यादा पॉजिटिव आता है, जबकि बाद में धीरे-धीरे पॉजिटिविटी कम होने लगती है। अगर तीन-चार दिनों के बाद टेस्ट कराते हैं तो एंटीबॉडी टेस्ट (डेंगू सिरॉलजी) कराना बेहतर है। डेंगू की जांच कराते हुए वाइट ब्लड सेल्स का टोटल काउंट और अलग-अलग काउंट करा लेना चाहिए। इस टेस्ट में प्लेटलेट्स की संख्या पता चल जाती है।

ताकि चलती रहे कामकाजी जिंदगी



हर समय घर-दफ्तर की भागदौड़ और इससे तालमेल बैठाने की कोशिश करते आप...मानो पूरा जीवन ही मशीनी हो गया है। पर यह मशीन लंबे समय तक साथ देती रहे, इसके लिए जरूरी है नियमित व्यायाम। वैसे ही जैसे आप दूसरे सब काम करते हैं 15 मिनट का समय निकाल कर कौन से आसन जरूर करें। कामकाजी लोगों के पास समय की बड़ी कमी होती है। व्यायाम न कर पाने के सी बहाने हमेशा तैयार रहते हैं। यूं भी सेहत के प्रति लापरवाह नजरिया हम भारतीयों में आसानी से देखने की मिलता है। सारा दिन कंप्यूटर, कुर्सी, टैबल, फोन तथा घर-ऑफिस के कामों में ही बीत जाता है। न चैन से भोजन करना, न चैन से सोना। यही कारण है कि अधिकांश युवा व कामकाजी वर्ग कम उम्र में ही उच्च व निम्न रक्तचाप, मधुमेह, मोटापे, स्लिप डिस्क, सर्वाइकल स्पाइन्डलाइटिस, उदर रोग, अपचन, वायु रोग, मानसिक तनाव, जोड़ों में दर्द तथा थकावट का शिकार हो रहा है। आधुनिक चिकित्सा के पास मनुष्य को संपूर्ण शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन तथा पूर्ण कार्यक्षम बनाने की कोई दवा नहीं है। योग के निरंतर तथा नियमित अभ्यास से जरूर इसका समाधान संभव है। यहां कुछ आसान क्रियाएं दी जा रही हैं, जिनके लिए घर व ऑफिस में कुछ समय निकाल कर अपनी कामकाजी जिंदगी को दीर्घायु बना सकते हैं..

1. ऑफिस में कुर्सी पर बैठ कर करने वाली योगिक क्रियाएं
2. घर/ ऑफिस में एकांत में की जाने वाली योगिक क्रियाएं
ऑफिस में कुर्सी पर बैठ कर करने वाली योगिक क्रियाएं
इन क्रियाओं को सूक्ष्म योगिक क्रियाएं कहते हैं। इन्हें आप ऑफिस की कुर्सी पर बैठे-बैठे कभी भी आसानी से कर सकते हैं। ये क्रियाएं गर्दन, हाथ, पैर तथा रीढ़ के लिए अलग-अलग होती हैं। इनके अभ्यास की विधि इस प्रकार है..

गर्दन की क्रियाएं: कुर्सी पर रीढ़, गर्दन व सिर को सीधा रख कर बैठ जाएं। दो गहरी सांस लें और छोड़ें। चेहरे को पांच बार दाएं और बाएं कंधे की ओर ले जाएं। इसके बाद पांच बार आगे व पीछे की ओर सिर झुकाएं। अंत में सिर को पांच बार घड़ी की सुई की दिशा में तथा इतनी ही बार विपरीत दिशा में घुमाएं। सर्वाइकल स्पाइन्डलाइटिस की स्थिति में सिर को आगे की ओर झुकाना तथा घुमाकर घुमाना मना होता है।
लाभ: ऐसा करते रहने से सर्वाइकल स्पाइन्डलाइटिस होने के खतरे से बच सकता है।
हाथ की क्रियाएं: कुर्सी पर रीढ़, गर्दन व सिर को सीधा कर बैठें। दो गहरे सांस लें व छोड़ें। अब दाएं हाथ के कंधे को हल्का कड़ा करें, फिर ऊपरी बांह, निचली बांह, कलाई व हथेली को कड़ा करें। हाथ को 10 सेकेंड तक कड़ा रखें, फिर हथेली, कलाई, निचली व ऊपरी बांह तथा कंधे को क्रम से ढीला करें। यह क्रिया 5 बार करें। बाएं हाथ से दोहराएं। इससे शोल्डर फ्रीजिंग, कलाई व उंगलियों में दर्द की आशंका नहीं रहती। कंप्यूटर पर देर तक काम करने वालों के लिए यह अच्छी क्रिया है।
योगिक श्रमन: इसका अभ्यास उठते, बैठते, चलते-फिरते तथा लेते हुए कभी भी किया जा सकता है। कुर्सी पर रीढ़, गला व सिर को सीधा रख कर बैठ जाएं। अब एक गहरी सांस लेकर पहले श्वास पेट में तथा उसके बाद सीने में भरें। श्वास निकालते समय पहले सीने को खाली करें। फिर पेट खाली करें। इसे 25 से 30 बार दोहराएं।
रीढ़ की क्रिया: कुर्सी पर रीढ़, गला व सिर को सीधा रख कर बैठें। दो गहरी सांस लें व छोड़ें। अब दोनों हाथ की हथेलियों को सिर के पीछे रख कर धड़ को आगे, पीछे, दाएं व बाएं मोड़ें। यह क्रिया 5 बार दोहराएं। यह क्रिया रीढ़ की प्रत्येक वल्टिबा को सशक्त करती है।

पैर के लिए व्यायाम

कुर्सी पर रीढ़, गला व सिर को सीधा कर बैठ जाएं। दो गहरी सांस लें व छोड़ें। इसके बाद दाएं पैर के क्रमशः नितंब, जांघ, पिंडली, एड़ी, पंजे तथा उंगलियों को हल्का, मध्यम तथा तीव्र कड़ा करें। इसके बाद उल्टी दिशा से उंगलियों से लेकर नितंब को धीरे-धीरे ढीला छोड़ दें। यह क्रिया 5 बार दोहराएं।

माइग्रेन: कैसे पाएं चैन...

तेज रफ्तार जिंदगी व अस्वस्थ जीवनशैली के कारण आज सिरदर्द की समस्या आम हो गई है। लंबे समय तक चलने वाला सिरदर्द आगे चल कर

माइग्रेन का रूप धारण कर लेता है। माइग्रेन का दर्द कुछ घंटे से लेकर कई दिनों तक रह सकता है। पहले माना जाता था कि माइग्रेन मस्तिष्क की रक्त

नलिकाओं के फैलने और सिकुड़ने के कारण होता है, लेकिन कई अनुसंधानों में यह बात सामने आई है कि माइग्रेन केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की गड़बड़ी के

कारण होता है, जिससे न्यूरोट्रांसमीटर्स का संचरण प्रभावित होता है, विशेष रूप से सेरोटोनिन हार्मोन में असंतुलन उत्पन्न हो जाता है।



महिलाएं हैं आसान शिकार

वचन में सिरदर्द लड़कियों की तुलना में लड़कों को अधिक होता है, लेकिन किशोरावस्था में पहुंचते ही लड़कियों में सिरदर्द की समस्या लड़कों के मुकाबले ज्यादा होती है। महिलाओं में माइग्रेन की समस्या पुरुषों के मुकाबले तीन गुना ज्यादा होती है। उम्र के साथ यह समस्या बढ़ती जाती है। महिलाओं में पीरियड्स, गर्भावस्था और मेनोपॉज के दौरान होने वाले हार्मोन परिवर्तनों का माइग्रेन से सीधा संबंध है। गर्भनिरोधक दवाओं का सेवन भी माइग्रेन के खतरे को बढ़ा देता है।

सर्विकोजेनिक हेडेक: सर्विकोजेनिक हेडेक क्रॉनिक हेडेक का सबसे सामान्यकारण है। इसकी उत्पत्ति सर्वाइकल स्पाइन से होती है। यह केवल एक ओर होता है। बहुत कम मामलों में ही देखा जाता है कि यह मस्तिष्क की मध्य रेखा को पार करता है। गर्दन का पॉश्चर या गति ठीक नहीं रखने से यह और गंभीर हो जाता है। कम्प्यूटर पर काम करने वाले लोगों में यह अक्सर देखा जाता है। अगर कंप्यूटर की स्क्रीन अधिक ऊंची है, तब गर्दन को ऊंचा करके देखना पड़ता है, जिससे सिरदर्द हो जाता है। गंभीर सर्विकोजेनिक हेडेक में ऑपरेशन की आवश्यकता भी पड़ सकती है।

सर्विकल स्पाइन्डोलोसिस: यह उम्र से संबंधित समस्या है, जो गर्दन के जोड़ों को प्रभावित करती है। सर्विकल स्पाइन्डोलोसिस सर्विकल स्पाइन की उपस्थितियों और हड्डियों में टूट-फूट के कारण होता है। इसे नेक अर्थराइटिस भी कहते हैं। यह 90व उन लोगों में होता है, जिनकी उम्र 65 वर्ष से अधिक होती है। यह गर्दन में लगी किसी चोट या आनुवंशिक कारणों से हो सकता है। इसके कारण सिरदर्द भी होता है।

माइग्रेन के प्रकार

माइग्रेन के दो प्रकार होते हैं, क्लासिकल और नॉन क्लासिकल। जब माइग्रेन का दर्द आंरा यानी दृष्टि संबंधी गड़बड़ी के बाद शुरू होता है, तब इसे क्लासिकल माइग्रेन कहते हैं। क्लासिकल माइग्रेन में आमतौर पर सिरदर्द के 10-15 मिनट पहले आंरा के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। जब सिरदर्द बिना 'आंरा' और दूसरे लक्षणों के साथ शुरू होता है, तब इसे नॉन क्लासिकल या सामान्य माइग्रेन कहते हैं। सामान्य माइग्रेन बच्चों और किशोरों में अधिक होता है। माइग्रेन के जो कुल मामले देखे जाते हैं, उनमें से 70 से 85 प्रतिशत सामान्य माइग्रेन और 15 से 30 प्रतिशत क्लासिकल माइग्रेन वाले होते हैं। छोटे बच्चों में माइग्रेन के दौर शाम को पड़ते हैं।

माइग्रेन के ट्रिगर

वैसे माइग्रेन के वास्तविक कारणों का पता नहीं है, पर देखा जाता है कि माइग्रेन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होता है। मनोवैज्ञानिक समस्याएं जैसे उत्तेजना और गहरा अवसाद या न्यूरोटिक डिसऑर्डर जैसे पक्षाघात और मिरगी भी माइग्रेन के खतरे को बढ़ा देते हैं।



कुछ अन्य ट्रिगर भी निम्न हैं..

तनाव और नींद की कमी। हार्मोंस में बदलाव विशेषकर महिलाओं में। सामान्य खान-पान की शैली में बदलाव। शुगर का स्तर कम हो जाना। कैफेन और अल्कोहल का सेवन। मौसम में बदलाव। गर्भनिरोधक गोलीयां और अस्थमा का उपचार। यात्रा करना। कुछ खाद्य पदार्थ जैसे चॉकलेट, मांस, नूडल्स, बीयर, रेड वाइन आदि। शारीरिक क्षमता से अधिक कार्य या एक्सरसाइज करना। पूरी नींद ना लेना या रात में देर तक जागना या बहुत ज्यादा सोना। डीहाइड्रेशन।

लक्षण

माइग्रेन के लक्षण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बदलते रहते हैं, बच्चों में यह सिर के अगले भाग और दोनों तरफ के हिस्सों को प्रभावित करता है। किशोरावस्था और प्रौढ़वस्था में दर्द सिर के एक हिस्से को प्रभावित करता है। माइग्रेन के सामान्य लक्षण इस प्रकार हैं.. तेज सिरदर्द के साथ चक्कर आना, जी मिचलाना, उलटी होना या पेट दर्द। रोशनी और आवाजों के प्रति संवेदनशीलता। मस्तिष्क के एक भाग में धुक-धुक की आवाज के साथ तेज दर्द होना। ध्यान केंद्रित करने में समस्या होना। सोचने की क्षमता प्रभावित होना। कभी-कभी बोलते समय उपयुक्त शब्द की तलाश न कर पाना। त्वचा का पीला पड़ जाना। चक्कर आना। उलटी होना या पेट दर्द।



हरविंदर ने पुरुष रिकर्व ओपन तीरंदाजी स्पर्धा में जीता स्वर्ण पदक

पेरिस। भारत के हरविंदर सिंह ने बुधवार को यहां पेरिस पैरालंपिक की पुरुष रिकर्व ओपन तीरंदाजी स्पर्धा के फाइनल में पोलैंड के लुकास सिजेक को एकतरफा मुकाबले में 6-0 से हराकर स्वर्ण पदक जीता और पैरालंपिक में लगातार दूसरा पदक सुनिश्चित किया। तोक्यो पैरालंपिक के कांस्य पदक विजेता नौवें वरीय हरविंदर ने दुनिया के 35वें नंबर के खिलाड़ी और छठे वरीय सिजेक को खिताबी मुकाबले में 28-24, 28-27, 29-25 से शिकस्त दी। भारत के एकमात्र पैरालंपिक पदक विजेता तीरंदाज हरविंदर ने पहले सेट में नौ अंक के साथ शुरुआत की जबकि लुकास ने भी इसका जवाब नौ अंक के साथ दिया। हरविंदर का अगला निशाना 10 अंक पर लगा जबकि

पोलैंड का तीरंदाज सात अंक ही जुटा पाया। भारतीय तीरंदाज ने इसके बाद नौ अंक के साथ पहला सेट 28-24 से अपने नाम किया। दूसरे सेट में सिजेक को एकतरफा मुकाबले में 6-0 से हराकर स्वर्ण पदक जीता और पैरालंपिक में लगातार दूसरा पदक सुनिश्चित किया। तोक्यो पैरालंपिक के कांस्य पदक विजेता नौवें वरीय हरविंदर ने दुनिया के 35वें नंबर के खिलाड़ी और छठे वरीय सिजेक को खिताबी मुकाबले में 28-24, 28-27, 29-25 से शिकस्त दी। भारत के एकमात्र पैरालंपिक पदक विजेता तीरंदाज हरविंदर ने पहले सेट में नौ अंक के साथ शुरुआत की जबकि लुकास ने भी इसका जवाब नौ अंक के साथ दिया। हरविंदर का अगला निशाना 10 अंक पर लगा जबकि

स्वर्ण... रजत... के बाद इस बार जीता कांस्य थंगावेलु ने पैरालंपिक में लगाई पदक की हैट्रिक

एजेसी ►► पेरिस

पैरालंपिक खेलों में भारत के लिए मंगलवार रात और बुधवार का दिन शानदार रहा। मरियप्पन थंगावेलु लगातार तीसरे पैरालंपिक खेलों में पदक जीतने वाले पहले भारतीय एथलीट बन गए हैं। उन्होंने 2016 में स्वर्ण, 2020 में रजत और इस बार कांस्य जीता है। अमेरिका के एजा फ्रेंच ने 1.94 मीटर की नई पैरालंपिक रिकॉर्ड छलांग लगाकर गोल्ड जीता। शरद कुमार ने पिछले पैरालंपिक खेलों में भी कांस्य पदक जीता था और इस बार उन्होंने अपने प्रदर्शन में सुधार करते हुए रजत पदक जीता। भारतीय पैरा एथलीटों ने पुरुषों की ऊंची कूद के एक ही इवेंट में दो पदक अपने नाम किए। शरद कुमार ने रजत पदक जीता तो मरियप्पन थंगावेलु ने कांस्य पदक जमाया। पुरुषों की ऊंची कूद के टी63 कैटेगरी में शरद कुमार ने 1.88 मीटर की छलांग लगाकर दूसरे नंबर पर रहे। वहीं, मरियप्पन थंगावेलु ने 1.85 मीटर की छलांग के साथ तीसरा स्थान हासिल किया। गोला फेंक में सचिन खिलाड़ी ने रजत पदक पर कब्जा जमाया।

21 पदकों के साथ तालिका में 12वें स्थान पर पहुंचा भारत



मरियप्पन थंगावेलु

शैलेश कुमार चौथे नंबर पर रहे

मरियप्पन थंगावेलु, शैलेश कुमार और शरद कुमार तीनों ही पदक की दौड़ में थे। शैलेश कुमार चौथे नंबर पर रहे और मेडल जीतने से चूक गए। उनकी बेस्ट छलांग 1.85 मीटर की रही। यह उनका पर्सनल बेस्ट प्रदर्शन भी है। शरद कुमार ने 1.88 मीटर की छलांग के साथ टी42 इवेंट का पैरालंपिक रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। इस इवेंट में टी42 के साथ ही टी63 कैटेगरी के एथलीट हिस्सा लेते हैं।

भारत के 20 मेडल हुए पूरे

मंगलवार को दल ने 5 पदक अपने नाम किए। शरद और मरियप्पन के अलावा अजीत सिंह और सुंदर सिंह गुर्जर ने पुरुषों की भाला फेंक एफ46 स्पर्धा में सिल्वर और ब्रॉन्ज मेडल जीते। इससे कुल छह पहले दीपि जोवनजी ने महिलाओं की 400 मीटर - टी20 में ब्रॉन्ज जीता था। इससे पहले सोमवार को भारत के खाते में 10 मेडल आए थे। भारत के पेरिस पैरालंपिक में अभी तक कुल 20 मेडल हो चुके हैं। इससे पहले तोक्यो में भारत ने सबसे ज्यादा 19 मेडल जीते थे।

बीसीसीआई चयन समिति में अजय रात्रा शामिल

एजेसी ►► नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने पूर्व भारतीय क्रिकेटर अजय रात्रा को पुरुष चयन समिति में नए सदस्य के तौर पर शामिल किया है। रात्रा अजीत अग्रकर की अनुआई वाली चयन समिति में शामिल अंकोला की जगह लेने और बांग्लादेश के खिलाफ 19 सितंबर से शुरू हो रही दो मैचों की



टेस्ट सीरीज को देखते हुए पद संभालेंगे। पूर्व विक्केटकीपर बल्लेबाज रात्रा के पास घरेलू और अंतरराष्ट्रीय का काफी अनुभव है। रात्रा ने भारत के लिए छह टेस्ट और 12 वनडे मुकाबले खेले हैं। उन्होंने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में हरियाणा का प्रतिनिधित्व किया है और 90 से ज्यादा प्रथम श्रेणी मैच खेले हैं और करीब चार हजार रन बनाए हैं। इसके अलावा विक्केट के पीछे 240 शिकार भी किए हैं। बीसीसीआई ने बयान जारी कर कहा, एक चयनकर्ता के रूप में रात्रा अगली पीढ़ी के क्रिकेटर्स को पहचान करने और उनका समर्थन करने के लिए चयन समिति के मौजूदा सदस्यों के साथ काम करने जो वैश्विक मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। रात्रा के पास असम, पंजाब और उत्तर प्रदेश के मुख्य कोच के रूप में काम करने का व्यापक कोविड अनुभव है। वह 2023 में दक्षिण अफ्रीका में वनडे सीरीज के दौरान भारतीय टीम के कोविड स्टाफ का भी हिस्सा थे।

आज पद संभालेंगे रात्रा

परंपरा के अनुसार सभी पांच चयनकर्ता अलग-अलग क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं और अजीत अग्रकर की अध्यक्षता वाली समिति में रात्रा उत्तर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करेंगे। पिछले साल अग्रकर को मुख्य चयनकर्ता नियुक्त किए जाने के बाद चयन पैनल में पश्चिम क्षेत्र से दो चयनकर्ता थे। अंकोला पहले से ही समिति का हिस्सा थे। भारत को 19 सितंबर से बांग्लादेश के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरी खेलनी है। हालांकि रात्रा गुरुवार से पद संभालेंगे जब दलीप ट्रॉफी शुरू होगी।

स्वर्ण संक्षेप



मैने स्पिनरों के खिलाफ डिफेंस पर काम किया

बंगलुरु। शुभमन गिल समझते हैं कि उनका टेस्ट करियर अभी तक उम्मीदों के मुताबिक शिखर पर नहीं पहुंचा है। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज को आगामी सत्र में होने वाले पारंपरिक प्रारूप के 10 मुकाबलों में स्पिनरों के खिलाफ अपने डिफेंस में सुधार की उम्मीद है। गिल ने इस साल इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू श्रृंखला में करीब 500 रन बनाए हैं जो अभी तक टेस्ट क्रिकेट में उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। अब वह 19 सितंबर से बांग्लादेश के खिलाफ शुरू हो रही दो मैचों की श्रृंखला में इस और बेहतर बनाना चाहते हैं जिसमें उन्हें मेहमान टीम के अनुभवी स्पिनरों से चुनौती मिलेगी।

किशन का पहले मैच में खेलना मुश्किल

बंगलुरु। विक्केटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन का हैमरिटिंग चोट के कारण गुरुवार को यहां दलीप ट्रॉफी के पहले दौर में खेलना संदिग्ध लग रहा है। किशन को श्रेयस अय्यर की कप्तानी वाली

भारत डी में शामिल किया गया है जो पहले दौर में अनंतपुर में भारत सी से भिड़ेगी। पता चला है कि किशन को हाल में कोयंबटूर में बुची बाबू आमंत्रण टूर्नामेंट में झारखंड के लिए खेलते हुए चोट लग गई थी। संजू सैमसन को उनकी जगह शामिल करने की बात भी चल रही थी लेकिन पूरी उम्मीद है कि एएस भरत पहले दौर में भारत डी के लिए विक्केटकीपिंग करेंगे।

संघर्ष को देखकर शतरंज खिलाड़ी बने गुजराती नई दिल्ली। विदित गुजराती का मानना है कि वह आक्रामक ही शतरंज के खिलाड़ी बने क्योंकि उन्होंने जब देखा कि उनके चिकित्सक माता-पिता को देर रात

किसी भी समय मरीज को देखने के लिए बुला दिया जाता है तो तब उन्होंने खेल को

अधिक स्थिर करियर के रूप में देखा जो कि उनकी गलती थी, लेकिन यह उनके लिए अच्छी साबित हुई। पंत ने नासिक का रहने वाला यह 29 वर्षीय खिलाड़ी लंदन में तीन से 12 अक्टूबर तक होने वाले वैश्विक शतरंज लीग के दूसरे सत्र में मुंबा मास्टर्स की तरफ से खेलेगा। गुजराती तब छह साल के थे जब उन्हें क्रिकेटर के बजाय शतरंज का खिलाड़ी बनने की सलाह दी गई।

नवारो-सबालेंका और टियाफो-फ्रिट्ज में होगी यूएस ओपन की अंतिम 4 जंग

18 वर्षों में पहली बार कोई अमेरिकी खिलाड़ी फाइनल में बनाएगा जगह

एजेसी ►► न्यूयॉर्क

अमेरिका की एम्मा नवारो ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट के महिला एकल के सेमीफाइनल में जगह बनाई जहां उनका सामना आर्यना सबालेंका से होगा। पुरुष वर्ग में अमेरिका के दो खिलाड़ियों 20वीं वरीयता प्राप्त फ्रांसिस टियाफो और 12वीं वरीयता प्राप्त टेलर फ्रिट्ज ने सेमीफाइनल में जगह बनाई जहां यह दोनों आमने-सामने होंगे। इससे यह सुनिश्चित हो गया कि 18 वर्षों में पहली बार अमेरिका का कोई खिलाड़ी पुरुष एकल के फाइनल में जगह बनाएगा। पहली बार किसी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के अंतिम चार में पहुंचने वाली 13वीं वरीयता प्राप्त नवारो ने मंगलवार को फ्लोरिडा में हमवतन पाउला बडोसा को 6-2, 7-5 से हराया। नवारो क्वार्टर फाइनल के इस मैच के दूसरे सेट में एक समय पीछे चल रही थी लेकिन उन्होंने आखिरी छह गेम जीत कर पास पलट दिया। उन्होंने पिछले मैच में गत चैंपियन कोको गॉफ के खिलाफ भी इसी तरह का प्रदर्शन किया था।



सबालेंका की आसान जीत

दूसरी वरीयता प्राप्त सबालेंका को पिछले महीने पेरिस ओलंपिक के स्वर्ण पदक जीतने वाली सातवीं वरीयता प्राप्त जेम्मा विक्बेन को 6-1, 6-2 से पराजित करने में किसी तरह की परेशानी नहीं हुई। दिग्गज टेनिस खिलाड़ी रोजर फेडरर भी इस मैच के गवाह बने। संन्यास लेने के बाद पहली बार वह दशक के रूप में अमेरिकी ओपन में पहुंचे थे। ऑस्ट्रेलियाई ओपन चैंपियन सबालेंका साल का दूसरा और कुल मिलाकर तीसरा ग्रेड स्लैम टूर्नामेंट जीतने की कवायद में हैं। वह अमेरिकी ओपन में लगातार चौथी बार सेमीफाइनल में पहुंची हैं। सबालेंका पिछले साल उपविजेता रही थीं।

3 साल में दूसरी बार अंतिम 4 में पहुंचे टियाफो

टियाफो ने तब तीन साल में दूसरी बार अमेरिकी ओपन के सेमीफाइनल में प्रवेश किया जब क्वार्टर फाइनल में उनके प्रतिद्वंद्वी विमिनोव ने चोट के कारण चौथे सेट में मैच से हटने का फैसला किया। उस समय टियाफो 6-3, 6-7 (5), 6-3, 4-1 से आगे चल रहे थे। इससे पहले फ्रिट्ज ने अमेरिकी ओपन में 2020 के उपविजेता अलेक्जेंडर जेरेवे को 7-6 (2), 3-6, 6-4, 7-6 (3) से हराकर पहली बार किसी बड़े टूर्नामेंट के अंतिम चार में जगह बनाई। एंडी रोडिक के 2003 में चैंपियन बनने के बाद अमेरिका का कोई भी खिलाड़ी वर्ष के अंतिम ग्रेड स्लैम टूर्नामेंट के पुरुष एकल का खिताब नहीं जीत पाया है। रोडिक अमेरिकी ओपन के फाइनल में पहुंचने वाले अमेरिका के अंतिम पुरुष खिलाड़ी भी थे। वह 2006 में खिताबी मुकाबले में फेडरर से हार गए थे।

बोपन्ना और सुत्तियादायी की जोड़ी हारी

न्यूयॉर्क। भारतीय टेनिस स्टार रोहन बोपन्ना और उनकी इंडोनेशियाई जोड़ीदार अलिखता सुत्तियादायी यहां मिश्रित युगल के सेमीफाइनल में डोगाल्ड लंग और टेलर टाउजसेड की अमेरिकी जोड़ी से 3-6, 4-6 से हारकर अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट से बाहर हो गए। भारत और इंडोनेशिया की जोड़ी ने इससे पहले छह घंटे 30 मिनट से अधिक समय तक घले क्वार्टर फाइनल मैच में मैथ्यू एबडेन और चेतक गणराज्य की बारबोरा केजिसिकोवा को हराया था। 44 वर्षीय बोपन्ना पहले ही पुरुष युगल से बाहर हो गए थे। उनकी और एबडेन की जोड़ी तीसरे दौर में मैक्सिम गोजालेज और आंद्रेय मोल्तेनी की अर्जेंटीना की 16वीं वरीय जोड़ी से 1-6, 5-7 से हार गई थी।



पाक हॉकी टीम के मुख्य कोच बने ताहिर

कराची। पूर्व ओलंपियन ताहिर जमां को पाकिस्तान हॉकी टीम का नया मुख्य कोच बनाया गया है जो चीन में एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में टीम से जुड़ेंगे। टूर्नामेंट आठ सितंबर से शुरू होगा। पाकिस्तान हॉकी महासंघ के साथ अल्पकालिक करार से रोलेंट ओल्मेंस के इनकार के बाद आनन फानन में यह नियुक्ति की गई है। पिछले दो अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में पाकिस्तानी टीम के साथ रहे ओल्मेंस को चीन में टीम से जुड़ना था लेकिन उन्होंने ऐन मौके पर दीर्घकालिक करार की मांग की।

सतीश और सुब्रमण्यम ताइपे ओपन में जीते

एजेसी ►► ताइपे

भारत के सतीश कुमार करुणाकरन और शंकर सुब्रमण्यम ने बुधवार को यहां संघर्षपूर्ण मुकाबलों में जीत दर्ज करके ताइपे ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष एकल क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। करुणाकरन ने थाईलैंड के कांताफोन वांगचारेण को 24-22, 23-21 से

भारत की अगुवाई करेंगे शरत-मनिका

नई दिल्ली। अनुभवी शरत कमल और स्टार महिला खिलाड़ी मनिका बत्रा अस्ताना में सात से 13 अक्टूबर तक चलने वाली 27वीं एशियाई टेबल टेनिस चैंपियनशिप में भारतीय टीम की अगुवाई करेंगे। पुरुष टीम के कप्तान 42 वर्षीय शरत हैं जिन्होंने हाल में अपने पांचवें और अंतिम ओलंपिक में हिस्सा लिया था। टीम में उनके अलावा मानव ठक्कर, हरमीत देसाई, जो साधियान और मानुश शाह शामिल हैं। मनिका महिला टीम की अगुवाई करेंगी जिसमें श्रीजा अकुला, अयहिका मुखर्जी, दिया चित्तले और सुतिथा मुखर्जी शामिल हैं।



सतीश और सुब्रमण्यम ताइपे ओपन में जीते

एजेसी ►► ताइपे

भारत के सतीश कुमार करुणाकरन और शंकर सुब्रमण्यम ने बुधवार को यहां संघर्षपूर्ण मुकाबलों में जीत दर्ज करके ताइपे ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष एकल क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। करुणाकरन ने थाईलैंड के कांताफोन वांगचारेण को 24-22, 23-21 से

जबकि सुब्रमण्यम ने फिनलैंड के जोकिम ओल्डोर्फ को 21-12, 19-21, 21-11 से हराया। पुरुष एकल में किरण जॉर्ज पहला गेम जीतने के बावजूद इंडोनेशिया के योहानस सॉट मार्सेलिनो से 15-21, 21-8, 21-16 से हार गए। महिला वर्ग में थाईलैंड की पोर्नपिचा चोइकीवोंग ने आकर्षी करण्य को सीधे गेम में 19-21, 18-21 से हरा दिया।

द्विविड़ बनेंगे राजस्थान राँयल्स के मुख्य कोच

एजेसी ►► नई दिल्ली

टी20विश्व कप 2024 जीतने वाली भारतीय टीम के मुख्य कोच रहे राहुल द्विविड़ आईपीएल 2025 में राजस्थान राँयल्स के मुख्य कोच बनने जा रहे हैं।

जून में बारबाडोस में भारत की खिताबी जीत के बाद ब्रेक लेने वाले द्विविड़ इस साल के आखिर में होने वाली नीलामी से पहले खिलाड़ियों के रिटैशन जैसे अहम मसलों पर काम करना शुरू करेंगे। एक सूत्र ने बताया, 'बातचीत आखिरी चरण में है और वह जल्दी ही मुख्य कोच का पद संभालेंगे।' पिछले तीन साल से राँयल्स के क्रिकेट निदेशक पद पर काबिज कुमार संगकारा इस भूमिका में बने रहेंगे।

प्रांजलि धूमल ने विश्व बधिर चैंपियनशिप में जीता कांस्य

नई दिल्ली। भारत की प्रांजलि धूमल ने जर्मनी के हनोवर में विश्व बधिर निशानेबाजी चैंपियनशिप में महिलाओं के 25 मीटर पिस्टल वर्ग में कांस्य पदक जीता। प्रांजलि ने बधिर विश्व रिकॉर्ड और चैंपियनशिप रिकॉर्ड के साथ 571 स्कोर करके फाइनल में जगह बनाई थी। फाइनल में उन्होंने आठवीं सीरिज में पांच में से तीन निशाने लगाकर क्रोएशिया की



लाना एस को एक अंक से हराया। उनका स्कोर 29 रहा। यूक्रेन की सोफिया ओलेनिच और हालिना मोसिना को क्रमशः स्वर्ण और रजत पदक मिले। भारत की अनुया प्रसाद फाइनल में पांचवें स्थान पर रही जबकि वेदिका शर्मा क्वालीफिकेशन दौर से ही बाहर हो गई। भारत ने अब तक टूर्नामेंट में तीन स्वर्ण, छह रजत और चार कांस्य पदक जीते हैं।

दुर्घटना के बाद पहली बार लंबी अवधि के प्रारूप में करेंगे वापसी दलीप ट्रॉफी आज से, ऋषभ पंत पर होगी निगाह

एजेसी ►► बंगलुरु दिसंबर 2022 में सड़क दुर्घटना में घायल होने के बाद पहली बार लंबी अवधि के प्रारूप में वापसी कर रहे विक्केटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत गुरुवार से बंगलुरु और अनंतपुर में शुरू होने वाले दलीप ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट में आकर्षण का केंद्र होंगे। पंत ने चोटों से उबरने के बाद सीमित ओवरों की क्रिकेट में सफल वापसी की लेकिन वह अभी तक लंबी अवधि के प्रारूप में नहीं खेले हैं। उन्होंने लाल गेंद से अनंत अंतिम मैच दिसंबर 2022 में बांग्लादेश के खिलाफ खेला था। अब वह अभिमान्यू इश्वरन की



नेतृत्व वाली टीम ए से होगा। सीमित ओवरों की क्रिकेट में वापसी करने में उन्हें किसी तरह की परेशानी नहीं हुई लेकिन यह चार दिवसीय टूर्नामेंट उनके लिए अलग तरह की चुनौती पेश करेगा क्योंकि उन्हें विक्केटकीपर और बल्लेबाज के रूप में लंबा समय मैदान पर बिताना पड़ सकता है। पंत को टीम बी का विशेषज्ञ विक्केटकीपर नियुक्त किया गया है जिससे पता चलता है कि भारत के टेस्ट क्रिकेट में आगे व्यस्त कार्यक्रम को देखते हुए अजीत अग्रकर की अगुवाई वाली चयन समिति इस विक्केटकीपर बल्लेबाज की वापसी को लेकर कितनी गंभीर है।

विकल्प तलाशने पर ध्यान

टीम डी का मुकाबला अनंतपुर में टीम सी से होगा जिसकी कप्तानी रजुराज गायकवाड़ को सौंपी गई है। चयन समिति इसके अलावा विशेषकर तेज गेंदबाजी विभाग में जसप्रीत बुग्गेश, मोहम्मद शमी और मोहम्मद सिराज के विकल्प तलाशने पर भी ध्यान देगी क्योंकि भारतीय टीम का आगे काफी व्यस्त कार्यक्रम है। सिराज अस्वस्थ होने के कारण टूर्नामेंट के पहले दौर में नहीं खेल पाएंगे जबकि शमी अभी ऑपरेशन के बाद पूरी तरह से फिट नहीं हुए हैं। ऐसे में चयनकर्ता बंगाल के तेज गेंदबाज मुकेश कुमार और आकाशदीप पर फैली नजर रखेंगे। इनके अलावा अश्विनीप सिंह, अवेश खान, खलील अहमद, विद्वत् कान्हेरप्पा, वैशाख विजयकुमार और हर्षित राणा भी चयन समिति को प्रभावित करने की कोशिश करेंगे।

टेस्ट रैंकिंग में 8वें स्थान पर खिसका पाकिस्तान

एजेसी ►► दुबई

बांग्लादेश के हाथों पहली बार टेस्ट श्रृंखला गंवाने के बाद पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद की टेस्ट रैंकिंग में आठवें स्थान पर खिसक गया और उसकी रेटिंग 1965 के बाद पहली बार अपने न्यूनतम स्तर पर पहुंच गई। पाकिस्तान पहले टेस्ट मैच में 10 विक्केट से और दूसरे मैच में छह विक्केट से हार गया था। यह दोनों मैच रावलापिंडी में खेले गए थे।



पहली बार इतने कम रेटिंग अंकों पर पहुंचा है। बांग्लादेश 13 रेटिंग अंक हासिल करने के बावजूद पाकिस्तान से पीछे नौवें स्थान पर बना हुआ है। श्रृंखला में 2-0 से जीत के बाद हालांकि विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की तालिका में उसको फायदा हुआ है और वह भारत, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बाद चौथे स्थान पर पहुंच गया है।

स्वच्छ संक्षेप

कमजोर हाजिर मांग से तांबा कीमतों में गिरावट

नई दिल्ली। कमजोर हाजिर मांग के बीच कारोबारियों द्वारा अपने सौदों की कटान करने से वायदा कारोबार में बुधवार को तांबा की कीमत 0.47 प्रतिशत की गिरावट के साथ 789.45 रुपये प्रति किग्रा रह गई। तांबा अनुबंध की कीमत 4.30 रुपये अथवा 0.47 प्रतिशत की गिरावट के साथ 789.45 रुपये प्रति किग्रा रह गई।

इकोस मोबिलिटी का शेयर पहले दिन 32 प्रतिशत चढ़ा



नई दिल्ली। ड्राइवर-चालित परिवहन समाधान प्रदाता इकोस मोबिलिटी एंड हासिलिटी लिमिटेड का शेयर बुधवार को बाजार में सूचीबद्ध होने के बाद अपने निर्गम मूल्य 334 रुपये से 32 प्रतिशत उछाल के साथ 437.28 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ।

रुपया गिरावट के साथ 84.02 प्रति डॉलर पर बंद



मुंबई। निवेशकों द्वारा जोखिम वाली परिसंपत्तियों से दूरी बनाये रखने के कारण घरेलू शेयर बाजार में भारी गिरावट के बीच अंतर बैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में बुधवार को डॉलर के मुकाबले रुपया चार पैसे की गिरावट के साथ 84.02 प्रति डॉलर पर बंद हुआ। डॉलर के कमजोर होने तथा कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट ने रुपये के नुकसान पर कुछ अंकुश लगाया।

कैपिटलैंड की वर्ष 2028 तक कोष दोगुना करने की योजना



मुंबई। सिंगापुर की रियल एस्टेट निवेश कंपनी कैपिटलैंड इन्वेस्टमेंट लिमिटेड ने बुधवार को कहा कि वह भारत में अपने प्रबंधन-अधीन कोष को वर्ष 2028 तक दोगुने से भी अधिक करना चाहती है। सीएलआई ने एक बयान में कहा कि वह अगले चार साल में अपने मुख्य बाजार भारत में अपने कोष को दोगुना से अधिक करने का लक्ष्य तय कर रही है।

कमजोर मांग से जस्ता वायदा की कीमतें गिरीं



नई दिल्ली। हाजिर बाजार से कमजोरी का संकेत लेकर सटोरियों द्वारा अपने सौदों का आकार घटाने से वायदा कारोबार में जस्ता की कीमत 1.3 प्रतिशत की गिरावट के साथ 262 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में सितंबर माह की डिलिवरी वाले अनुबंध के लिए जस्ता का भाव 3.45 रुपये या 1.3 प्रतिशत की गिरावट के साथ 262 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई।

एल्युमीनियम कीमतों में गिरावट, मांग कमजोर



नई दिल्ली। हाजिर बाजार में कमजोरी के रुख के बीच कारोबारियों द्वारा अपने सौदों की कटान करने से वायदा कारोबार में एल्युमीनियम की कीमत 2.95 रुपये की गिरावट के साथ 221.55 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में अक्टूबर माह की डिलिवरी के लिए एल्युमीनियम के अनुबंध का भाव 2.95 रुपये यानी 1.31 प्रतिशत की गिरावट के साथ 221.55 रुपये प्रति किलोग्राम रह गया। इसमें 127 लॉट के लिए कारोबार हुआ।

भारतीय स्पेस स्टार्टअप बना रहा फिर से इस्तेमाल होने वाले रॉकेट

एजेंसी नई दिल्ली

चेन्नई स्थित स्पेस टेक स्टार्टअप स्पेसजोन (इंडिया) ने पिछले महीने 24 अगस्त को देश का पहला दोबारा इस्तेमाल होने वाला हाइब्रिड रॉकेट लॉन्च किया था। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, स्पेसजोन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आनंद मेगालिंगम ने हाल ही में कहा है कि रीयूजेबल हाइब्रिड रॉकेट के सफल लॉन्च से राजस्व में 20 गुना वृद्धि हो सकती है। उन्होंने यह भी कहा है कि इससे कंपनी को निवेश हासिल करने में भी मदद मिल सकती है।

चेन्नई स्थित स्पेस स्टार्टअप चाहती है 50 करोड़ रुपये का निवेश

इतना राजस्व उत्पन्न कर सकती है कंपनी

आनंद ने कहा, हमने वित्त वर्ष 24 को 2.8 करोड़ रुपये के राजस्व के साथ बंद किया और हम इस वित्त वर्ष में पहले ही 5 करोड़ रुपये को पार कर चुके हैं। उन्होंने आगे कहा, हम अगले साल अलग-अलग फेज के साथ 10 रीयूजेबल रॉकेट लॉन्च करेंगे। हम कंपनियों के लिए लॉन्च सेवाओं का संचालन करके अगले वित्त वर्ष में 100 करोड़ रुपये का राजस्व उत्पन्न कर सकते हैं।



इतना हो सकता है कंपनी का मूल्यांकन

भारत के पहले रीयूजेबल रॉकेट रूमी-1 के लॉन्च और रिकवरी ने स्पेसजोन को आश्चर्यजनक ऊंचाई पर पहुंचाया और अब स्टार्टअप मूल्यांकन के दौर से गुजर रही है। आनंद ने कहा, "डिस्काउंटेड कैश फ्लो को शामिल करने के बाद हमारा मूल्यांकन लगभग 800 करोड़ रुपये हो सकता है। कंपनी को लाभ कमाने के लिए बस 1 साल में 8 लॉन्च की जरूरत है। इनमें से 2 लॉन्च क्रमशः 2026 और 2027 में होने वाले रूमी-2 और रूमी-3 होंगे।

इस्पात उद्योग की वृद्धि में आ रही समस्याओं पर की चर्चा

इस्पात आयात शुल्क बढ़ाकर 10-12 % करने वित्त मंत्रालय को मनाने का प्रयास करेंगे: कुमारस्वामी

एजेंसी नई दिल्ली

केंद्रीय इस्पात मंत्री एच. डी. कुमारस्वामी ने बुधवार को कहा कि वह वित्त मंत्रालय को इस्पात आयात पर शुल्क मौजूदा 7.5 प्रतिशत से बढ़ाकर 10-12 प्रतिशत करने के लिए मनाने की कोशिश करेंगे। मंत्री ने चीन द्वारा भारत में इस्पात की 'डंपिंग' के तरीके पर चिंता व्यक्त की और कहा कि पिछले दो महीनों में इस्पात उद्योग से जुड़े कई लोगों ने उनसे मुलाकात की और इस्पात उद्योग की वृद्धि में आ रही समस्याओं पर चर्चा की।

स्वच्छ ईंधन पाने के लिए चुनौतियां



मंत्री ने कहा कि नवीनतम प्रौद्योगिकियों में निवेश और प्रक्रियाओं को अनुकूलित कर कार्बन उत्सर्जन को काफी कम किया जा सकता है। उन्होंने कहा, "इस्पात उत्पादन के लिए स्वच्छ ईंधन के रूप में हाइड्रोजन में अपार संभावनाएं हैं। हालांकि इसमें चुनौतियों का सामना करना होगा...हमें इसके व्यावसायिकरण में तेजी लाने के लिए अनुसंधान व विकास में निवेश करना होगा।

सरकार एक-दो महीने में फेन-3 योजना को देगी मंजूरी



केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री एच. डी. कुमारस्वामी ने बुधवार को कहा कि सरकार अपनी प्रमुख इलेक्ट्रिक परिवहन आख्यान वाली योजना 'फेन-3' के तीसरे चरण को एक या दो महीने में अंतिम रूप दे देगी। उन्होंने कहा कि एक अंतर-मंत्रालयी समूह इस योजना के लिए प्रायोजन पर गौर कर रहा है। इसके साथ ही (एलईएड एन) इलेक्ट्रिक वाहनों को तेजी से अपनाने व विनिर्माण (फेन) से जुड़ी योजना के पहले दो चरणों में पेश हुई समस्याओं के समाधान के प्रयास भी जारी हैं। फेन-3 अस्थायी इलेक्ट्रिक मोबिलिटी प्रमोशन स्कैम (ईएफपीएस) 2024 की जगह लेगी। इस योजना की अवधि सितंबर से समाप्त हो रही है।

वित्त मंत्रालय को समझाने का प्रयास करेंगे

भारतीय इस्पात संघ द्वारा आयोजित पांचवें इस्पात सम्मेलन में उन्होंने कहा, "चीन के कारण आपको जो समस्याएं पेश हो रही हैं, उसके लिए मैं वित्त मंत्रालय को समझाने की कोशिश करूंगा कि वह इस्पात आयात पर शुल्क को 7.5 प्रतिशत से बढ़ाकर 10-12 प्रतिशत करने पर विचार करें। मंत्री ने वैश्विक मांग में मंदी खासकर चीन में मांग में कमी के प्रभाव जैसी चुनौतियों के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

वित्त मंत्रालय को समझाने का प्रयास करेंगे

भारतीय इस्पात संघ द्वारा आयोजित पांचवें इस्पात सम्मेलन में उन्होंने कहा, "चीन के कारण आपको जो समस्याएं पेश हो रही हैं, उसके लिए मैं वित्त मंत्रालय को समझाने की कोशिश करूंगा कि वह इस्पात आयात पर शुल्क को 7.5 प्रतिशत से बढ़ाकर 10-12 प्रतिशत करने पर विचार करें। मंत्री ने वैश्विक मांग में मंदी खासकर चीन में मांग में कमी के प्रभाव जैसी चुनौतियों के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

जीआईसी की शेयर बिक्री पेशकश को पहले दिन ही मिली अधिक बोलियां

एजेंसी नई दिल्ली

सरकार की पुनर्बांभा कंपनी जनरल इन्श्योरेंस कॉरपोरेशन में 5.95 करोड़ शेयर यानी 3.39 प्रतिशत हिस्सेदारी बेचने के लिए बिक्री पेशकश को बुधवार को हल्की प्रतिक्रिया मिली। निर्गम को बाजार बंद होने से ठीक पहले पूरा अभिदान मिला। सरकार के पास वर्तमान में जीआईसी में 85.78 प्रतिशत हिस्सेदारी है। जीआईसी अक्टूबर, 2017 में शेयर बाजार में सूचीबद्ध हुई। सरकार ने आर्थिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) से 9,685 करोड़ रुपये जुटाए थे।

दोपहिया खरीदारों को कम कीमत पर हेलमेट उपलब्ध कराएं कंपनियां : गडकरी



नई दिल्ली। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने दोपहिया वाहन विनिर्माताओं से वाहन खरीदारों को छूट या उचित दर पर हेलमेट उपलब्ध कराने का अनुरोध किया। गडकरी ने यहां एक कार्यक्रम में कहा मैं दोपहिया वाहन निमाताओं से अनुरोध करने के बारे में सोच रहा हूँ। अगर वे वाहन खरीदने वालों को हेलमेट पर कुछ उचित छूट दे सकें तो लोगों की जान हम बचा सकते हैं। इसके साथ ही गडकरी ने स्कूल बसों के लिए पार्किंग व्यवस्था की योजना बनाने की जरूरत पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम 2019 में यातायात उल्लंघनों पर भारी जुर्माने का प्रावधान किया गया है, लेकिन असल में इन्हें प्रभावी ढंग से लागू करना एक बड़ी चुनौती है। गडकरी ने कहा कि वह सुरक्षित यातायात को बढ़ावा देने के लिए देश के हर तालुका में ड्राइविंग स्कूल खोलना चाहते हैं।

मैकडॉनल्ड्स मोटे अनाज से तैयार 'बन' का बर्गर बेचेगी

एजेंसी नई दिल्ली

फ्रेंचाइजी वेस्टलाइफ फूडवर्ल्ड के जरिये पश्चिम और दक्षिण भारत में त्वरित सेवा रैस्तयां शृंखला संचालित करने वाली मैकडॉनल्ड्स इंडिया कई तरह के मोटे अनाज से बनाए गए 'बन' वाला बर्गर पेश करेगी। इस बन को प्रमुख खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीएफटीआरआई के साथ मिलकर बनाया गया है। इसमें पांच मोटे अनाज- बाजरा, रागी, ज्वार, चना (प्रोसो) और कोदो का इस्तेमाल किया जा रहा है। कंपनी ने इस खास तरह के बन के लिए सीएसआईआर-केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान के साथ साझेदारी की है।

मैकडॉनल्ड्स मोटे अनाज से तैयार 'बन' का बर्गर बेचेगी

एजेंसी नई दिल्ली

फ्रेंचाइजी वेस्टलाइफ फूडवर्ल्ड के जरिये पश्चिम और दक्षिण भारत में त्वरित सेवा रैस्तयां शृंखला संचालित करने वाली मैकडॉनल्ड्स इंडिया कई तरह के मोटे अनाज से बनाए गए 'बन' वाला बर्गर पेश करेगी। इस बन को प्रमुख खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीएफटीआरआई के साथ मिलकर बनाया गया है। इसमें पांच मोटे अनाज- बाजरा, रागी, ज्वार, चना (प्रोसो) और कोदो का इस्तेमाल किया जा रहा है। कंपनी ने इस खास तरह के बन के लिए सीएसआईआर-केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान के साथ साझेदारी की है।

पाँच हजार किसानों से अनाज खरीदी होगी : इसके लिए 5,000 किसानों से मोटे अनाज की खरीद की जाएगी। यह क्षेत्र में अपनी तरह की पहली साझेदारी है। इसमें पॉस्टिक खाद्य विकल्पों की विकसित करने की दिशा में मैकडॉनल्ड्स के प्रयासों के साथ सीएसआईआर-सीएफटीआरआई की विशेषज्ञता को जोड़ा गया है।



कीमत में हो जाएगी 10 रुपये बढ़ोतरी : अक्षय जटियेश ने कहा कि इस खास बर्गर के लिए वाहनों को सामान्य बर्गर की तुलना में 10 रुपये अधिक चुकाने होंगे। यह नई पेशकश मैकडॉनल्ड्स के सभी 400 बिक्री केंद्रों पर उपलब्ध होगी। यह संयुक्त प्रयास ऐसे मेक्यु उत्पाद विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है जो अतिरिक्त पोषण मूल्य प्रदान करते हैं और स्वाद का भी ध्यान रखते हैं।

प्रति शेयर 395 रुपए के भाव से बिक्री

सरकार जीआईसी में 5.95 करोड़ शेयर यानी 3.39 प्रतिशत हिस्सेदारी 395 रुपये प्रति शेयर के भाव पर बेच रही है जबकि ज्यादा बोलियां आने पर 3.39 प्रतिशत अतिरिक्त हिस्सेदारी बेचने का विकल्प रखा गया है। इससे निर्गम का कुल आकार 6.78 प्रतिशत बैठता है। आईडीबीआई कैपिटल मार्केट्स एंड सिक्योरिटीज, एफबीआई कैप सिक्योरिटीज, बीओबी कैपिटल मार्केट्स और एलारा सिक्योरिटीज (इंडिया) प्राइवेट लि. ने बिक्री पेशकश के लिए बिक्री प्रबंधक हैं। बीएफएसई में जीआईसी का शेयर 5.57 प्रतिशत की गिरावट के साथ 397.80 रुपये पर रहा।

5.78 करोड़ शेयरों के लिए आई बोलियां

बीएफएसई पर उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, दोपहर 3.20 बजे तक गैर-खुदरा निवेशकों से 5.78 करोड़ शेयर के लिए बोलियां आईं। यह उनके लिए आरक्षित 5.35 करोड़ शेयर का 107.92 प्रतिशत है। बोली के लिए तय 395.03 करोड़ रुपये प्रति इक्विटी शेयर भाव पर दोपहर 3.20 तक 2,284 करोड़ रुपये के आवेदन आए। खुदरा निवेशक बिक्री पेशकश के अंतर्गत बृहस्पतिवार को बोली लगा सकते हैं।

भारत में विमान विनिर्माण इकाई स्थापित करने की योजना...



नई दिल्ली। केंद्रीय नागर विमानन मंत्री के. राममोहन नायडू ने बुधवार को कहा कि सरकार भारत में विमान विनिर्माण की योजना को आगे बढ़ाने के लिए एक विशेष प्रयोजन वाहन स्थापित करने पर विचार कर रही है। राष्ट्रीय राजधानी में एक सम्मेलन में नायडू ने कहा कि यह सुनिश्चित करने के प्रयास किए जा रहे हैं कि अगले पांच वर्षों में देश में विमान विनिर्माण शुरू करने के प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए एक विशेष प्रयोजन वाहन स्थापित करने पर विचार कर रहा है। मंत्री ने उद्योग मंडल पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित सम्मेलन में यह बात कही।

निर्यातकों के लिए ब्याज समानीकरण योजना 30 सितंबर तक बढ़ाई गई

एजेंसी नई दिल्ली

सरकार ने एमएसएमई निर्यातकों के लिए निर्यात से पहले और बाद में रुपये में लिए जाने वाले कर्ज पर ब्याज समानीकरण योजना की अवधि 30 सितंबर 2024 तक बढ़ा दी है। इस योजना का मकसद निर्यात को प्रोत्साहन देना है। निर्यातकों को ब्याज लाभ प्रदान करने वाली यह योजना 31 अगस्त को समाप्त हो गई थी। जून में इसे दो महीने के लिए बढ़ा दिया गया था।

कुछ लोगों को ही मिलेगा लाभ

विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने एक व्यापार नोटिस में कहा, "व्यापार तथा उद्योग को सुविधा दिया जाता है कि निर्यातकों के लिए निर्यात से पहले और बाद में रुपये में लिए जाने वाले कर्ज पर ब्याज समानीकरण योजना की अवधि 30 सितंबर 2024 तक बढ़ा दी गई है।" इसमें स्पष्ट किया गया कि यह योजना केवल सूक्ष्म, लघु व मझोले उद्यम (एमएसएमई) विनिर्माण निर्यातकों के लिए है।

ब्याज पर मिलती है सब्सिडी

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने इससे पहले आठ दिसंबर 2023 को इस योजना को 30 जून तक जारी रखने के लिए 2,500 करोड़ रुपये के अतिरिक्त आवंटन को मंजूरी दी थी। निर्यातकों को निर्यात से पहले और बाद में रुपये में लिए जाने वाले कर्ज पर ब्याज समानीकरण योजना के तहत सब्सिडी मिलती है।

विमानों के करीब आने की घटनाएं घटीं: डीजीसीए

नई दिल्ली। विमानन नियामक डीजीसीए ने बुधवार को कहा कि देश में विमानों के अस्थिर लैंडिंग अप्रोच और भारतीय हवाई क्षेत्र में जोखिम वाले 'एयरपॉक्स' की घटनाओं की संख्या 2023 में काफी कम हो गई। समीक्षा रिपोर्ट की जानकारी दी है। नियामक ने अपनी समीक्षा रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि प्रति दस हजार उड़ानों में लैंडिंग के समय अस्थिर अप्रोच का अनुपात लगातार घटा है।

गिरावट के साथ आज 82,352.64 अंक पर हुआ बंद

लाल निशान पर बंद हुआ शेयर बाजार, सेंसेक्स 202 अंक टूटा

एजेंसी मुंबई

शेयर बाजार के सेंसेक्स और निफ्टी दोनों में आज (4 सितंबर) हफ्ते के तीसरे कारोबारी दिन गिरावट दर्ज हुई है। सेंसेक्स 202 अंक की गिरावट के साथ आज 82,352.64 अंक पर बंद हुआ, जबकि निफ्टी 81 अंक फिसलकर 25,198.70 अंक पर बंद हुआ। मिडकैप शेयरों में भी आज पूरे दिन उतार-चढ़ाव भरा माहौल रहा। निफ्टी मिडकैप 50 मार्केट बंद होने तक 23 अंक की गिरावट के साथ 16,627.95 अंक पर बंद हुआ।

ये शेयर रहे टॉप गेनर्स और लूजर्स

टॉप गेनर्स में आज बायोकोन, हिंदपेट्रो और बर्जर पेट्रोल ने क्रमशः 4.84 फीसदी, 4.51 फीसदी और 3.62 फीसदी की बढ़त के साथ अच्छा प्रदर्शन किया। वेन्यूरस और एमसीएसड इंडिया के शेयरों में भी क्रमशः 2.79 फीसदी और 2.77 फीसदी की बढ़त दर्ज हुई। आरबीएल बैंक, फेडरल बैंक, विप्रो, कोल इंडिया और टाटा पॉवर क्रमशः 4.04 फीसदी, 3.46 फीसदी, 3.15 फीसदी, 3.07 फीसदी और 3.01 फीसदी की गिरावट के साथ टॉप लूजर्स रहे।

सोना और चांदी की कीमत हुई मामूली गिरावट

भारतीय सरफा बाजार में सोना-चांदी की कीमतों में आज मामूली गिरावट देखने को मिली है। आज 24 कैरेट सोना सरफा होकर 71,280 रुपये प्रति 10 ग्राम बिक रहा है और चांदी की बात करें तो यह 81,038 रुपये प्रति किलो बिक रही है। खबर लिखे जाने तक अंतरराष्ट्रीय बाजार में यूरोपीय शेयर बाजार में एफटीएसई और सीएफटी गिरावट के साथ कारोबार कर रहा था। अमेरिकी शेयर बाजार के S&P 500 और नैस्डैक गिरावट के साथ लाल निशान पर है।

निफ्टी मिडकैप 50 मार्केट बंद होने तक 23 अंक की गिरावट के साथ

निफ्टी मिडकैप 50 मार्केट बंद होने तक 23 अंक की गिरावट के साथ 16,627.95 अंक पर बंद हुआ।

बुलडोजर कार्रवाई पर जुबानी जंग

योगी बोले- दंगाइयों के सामने 'नाक रगड़ने' वाले बुलडोजर नहीं चला सकते

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग में नियुक्त पत्र दिए

एजेसी लखनऊ
उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव पर तंज कसते हुए कहा कि अपराधियों पर बुलडोजर चलाने के लिए बुलडोजर जैसी इच्छाशक्ति चाहिए।
दंगाइयों के सामने नाक रगड़ने वाले बुलडोजर नहीं चला सकते हैं। योगी ने ये बयान अखिलेश यादव की उस टिप्पणी के जवाब में दिया है जिसमें अखिलेश यादव ने कहा था कि सत्ता में आए तो 2027 के बाद बुलडोजर को गोरखपुर की तरफ मोड़ देंगे। योगी बुधवार को लखनऊ के लोकभवन में आयोजित कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा चर्चयित 1334 अवर अभियंता, संगणक व फोरमैन को नियुक्ति पत्र वितरित करने के बाद संबोधित कर रहे थे।

अखिलेश की टिप्पणी पर योगी ने दिया करारा जवाब



...अब टीपू भी सुल्तान बनने के सपने देख रहे हैं।

योगी ने कहा कि अब टीपू भी सुल्तान बनने के सपने देख रहे हैं। कुछ समय पहले एक नाटक आता था मुंगेरों लाल के हसीन सपने, आज वह लोग भी सपने देख रहे हैं। यह लोग सपना देख रहे हैं। जब इनको अवर मिलता था तो युवाओं के मविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे थे।

पहले नौकरियों में लगती थी चाचा-मतीजे में होड़

उन्होंने कहा कि 2017 के पहले जब नौकरियां निकलती थी तो चाचा मतीजे में वसूली की होड़ लगती थी। आज कुछ जिलों में आदमखोर भेड़ियों का आतंक है। 2018 से पहले ऐसा ही आतंक और स्थिति यूपी में थी। इनके भी क्षेत्र बांटे थे। मद्रास के सभी किरदार इसमें थे। जो आज खोल रहे हैं, इनको पहले भी अवर मिला था। इनकी कुंज किया नहीं। इन पर विचार करने की जरूरत नहीं है। प्रदेश की जनता इन लोगों के समय की गुंडागर्दी और अमर्यादित आचरण देख चुकी है। आपका एक ही लक्ष्य विभाग को सर्वोत्तम बनाना होना चाहिए। हम देश को विकसित भारत बनाना है।

बेईमानी करने वालों की संपत्ति भी कुर्क करेंगे

योगी ने कहा कि सपा सरकारों ने यूपी में युवाओं के सामने पहचान का संकट खड़ा किया। आज युवाओं को उनकी प्रतिभा, क्षमता से निरुत्थित पत्र मिल रहा है। अगर युवाओं की राह में कोई बैरियर है तो हम उसको हटाएंगे। बैरियर तोड़ेंगे। बेईमानी करने वालों की संपत्ति भी कुर्क करेंगे। यहां पर नियुक्ति पत्र वितरित किया गया। इनका चयन केवल प्रतिभा और आरक्षण के नियमों का पालन करते हुए है। यही युवा उत्तर प्रदेश को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाएंगे। प्रदेश को आज हम अवीकर स्टेट बना रहे हैं।

बड़े निवेश से और रोजगार बढ़ेंगे

प्रदेश में तेजी से इज ऑफ ड्यूटी बिजनेस बढ़ा है। 40 लाख करोड़ का निवेश आया है। इससे डेढ़ करोड़ युवाओं को रोजगार मिलेगा। एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) एक ब्रांड बन गया है।

ये बोले थे अखिलेश

बुलडोजर एक्शन पूरी तरह असंवैधानिक



रहा अखिलेश अखिलेश यादव ने सीएम योगी के बयान पर जवाब देते हुए कहा कि बुलडोजर के पास दिमाग नहीं होता है वे स्टैटरिंग से चलता है। जनता कब स्टैटरिंग बंद करे को नहीं जानता है। दिल्ली वाले कब स्टैटरिंग बंद करे को नहीं जानता है। यह एक्शन पूरी तरह से असंवैधानिक है। यदि, अखिलेश जमीन पर बुलडोजर चलाए जा रहे हैं तो योगी सीएम निवास का भी नक्शा हमें दिखा दें। ज्यादातर बसावट में अखिलेश अतिक्रमण मिल जाएगा तो क्या सारी बसावटों को उजाड़ दिया जाएगा? हालांकि, बेजा कब्जे के बहाने योगी कहीं और भी निशाना साध रहे हैं।

शिक्षकों के खिलाफ षडयंत्र रच रही सरकार

69000 शिक्षक मर्ती के अस्थिरों के प्रदर्शन पर अखिलेश यादव ने कहा कि इस समय सबसे ज्यादा कोई परेशान है तो शिक्षक है। हाईकोर्ट ने सूची रद्द कर दी है। अब सरकार उनके खिलाफ षडयंत्र रच रही है।

खबर संक्षेप

बिभव की रिहाई पर गड़क उठी मालीवाल

नई दिल्ली। आप सांसद स्वाति मालीवाल ने सुनीता केजरीवाल के पोस्ट को साझा करते हुए लिखा, मुख्यमंत्री जी की पत्नी, जो मेरी पिटाई के दौरान घर पर ही थीं, उनको बड़ा सुकून महसूस हो रहा है। सुकून इसलिए कि वह आदमी जिसने मुझे उनके घर में पीटा और अभद्रता की, वह शर्तिया बेल पर आया है। महिलाओं को मारो पीटो। हम पहले गंदी ट्रेलिंग करवा देंगे।

52 ट्रेनें निरस्त और 42 का रूट परिवर्तित किया

अगर। उत्तर प्रदेश के आगरा से दिल्ली का सफर आगामी कुछ दिन तक आसान नहीं होगा। बुधवार से पलवल रेलवे स्टेशन पर प्री-नॉन और नॉन-इंटरलॉकिंग कार्य शुरू हो रहा है। आगरा मंडल से होकर गुजरने वाली 118 यात्री ट्रेनों का परिवर्तन प्रभावित होगा। छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस-फिरोजपुर पंजाब मेल 5 से 16 सितंबर तक परिवर्तित मार्ग से संचालित होगी।

बेरोजगार युवक के घर पहुंची जीएसटी टीम

मुजफ्फरनगर। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में बेहद हीरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक युवक के घर पर जीएसटी विभाग के कर्मचारी पहुंचे और दरवाजा खटखटाया। युवक जब बाहर आया तो उसे बताया गया कि उसके नाम से एक कंपनी चल रही है। उस कंपनी में करीब ढाई सौ करोड़ की जीएसटी ई व बिलिंग का लेनदेन हुआ है।

पटोले ने भी तुकराई उद्भव के सीएम की मांग

मुंबई। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव को लेकर बयानबाजी तेज हो गई है। राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी- एसपी के प्रमुख शरद पवार के बाद नाना पटोले ने भी उद्भव की मांग तुकरा दी है। उद्भव ठाकरे ने सीएम पद का चेहरा घोषित करने की मांग की थी। साथ ही जिसके ज्यादा विधायक उसका सीएम न बनाया जाए, यह भी मांग की थी। शरद के बयान को कांग्रेस ने भी समर्थन दिया है।

बीयर बार में बदमाशों ने की लूट, 5 गिरफ्तार

नागपुर। महाराष्ट्र के नागपुर जिले में चाकू और तलवार की नोक पर लूट की वारदात सामने आई है। यहां 5 युवक तलवार और चाकू लेकर घुसे। युवकों को देख दहशत से सभी ग्राहक भाग गए। वे चाकू और तलवार को पटक के तोड़फोड़ करते हैं। बार के मैनेजर को डरा के पैसे लूटे। कई शराब की बोतल भी ले गए। वग्राभी पुलिस ने मामले में 5 लोगों को गिरफ्तार किया है।

केंद्रीय मंत्री रिजिजू ने 'अपराजिता कानून' पर उठाए सवाल

मुख्यमंत्री ममता ने प्रभावी कार्रवाई नहीं की और सरकार के सबसे 'पवित्र' कर्तव्य की अनदेखी की

एजेसी नई दिल्ली कोलकाता

ममता सरकार ने महिलाओं और बच्चों को त्वरित न्याय नहीं दिया



पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में नौ अगस्त को एक प्र शि क्षु, म हि ला डॉक्टर के साथ दुष्कर्म और हत्याकांड के बाद लाए गए बलात्कार रोधी विधेयक पर संसदीय कार्यमंत्री किरन रिजिजू ने ममता सरकार के दुष्कर्म रोधी विधेयक अपराजिता कानून पर सवाल उठाए हैं।

संसद के कड़े कानून का पालन नहीं किया

रिजिजू ने सोशल मीडिया एक्स पर पत्र साझा करते हुए लिखा कि मुझे दुख है कि सीएम ममता ने महिलाओं और बच्चों को त्वरित न्याय प्रदान करने के अपने सबसे पवित्र कर्तव्य की अनदेखी की। यह पत्र 2021 का है, जिसमें सारी बातें स्पष्ट हैं। 2018 में बलात्कार और हत्या जैसे खतरनाक अपराधों से निपटने के लिए संसद द्वारा एक कड़ा कानून पारित किया गया था। इस पर राज्य सरकारों को कार्रवाई करनी चाहिए। न्याय के लिए केंद्र सरकार करेगी मदद रिजिजू के सोशल मीडिया एक्स पर संकेंद्रित पत्र के अनुसार बच्चों और महिलाओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी केंद्र और राज्य सरकारों की है। राज्य सरकारें अपने तरीके से किसी भी समस्या का समाधान निकालें, जिससे जल्द से जल्द न्याय हो सके। न्याय के लिए राज्य सरकार की सहायता भी की जाएगी। दरअसल आरजी कर कांड के बाद जारी विरोध प्रदर्शन के दबाव में ममता सरकार ने राज्य विधानसभा का दो-दिवसीय विशेष सत्र दो सितंबर से आहूत किया। इसी में यह विधेयक पारित किया गया है।

पीड़िता को अब तक न्याय क्यों नहीं मिला?

केंद्रीय मंत्री रिजिजू ने एकस पोस्ट में 2018 का एक पत्र अपलोड किया है और इसमें महिला अपराधों पर प्रभावी कार्रवाई की जिम्मेदारी है। रिजिजू ने एक्स पर लिखा मुझे दुख है कि बंगाल की सीएम ने महिलाओं और बच्चों को त्वरित न्याय प्रदान करने के अपने सबसे पवित्र कर्तव्य की अनदेखी की। बंगाल विधानसभा ने सर्वसम्मति से मंगलवार को बलात्कार रोधी विधेयक पारित किया गया है। इसमें यदि पीड़िता की मौत हो जाती है या 'कोमा' में जाने की स्थिति हो जाती है तो दोषियों के लिए मृत्युदंड का प्रावधान किया गया है।

कोलकाता रेप-मर्डर केस

संदीप पहुंचे शीर्ष कोर्ट, फैसले पर सवाल



कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में हुई एक महिला ट्रेनों डॉक्टर की रेप के बाद हत्या की घटना के बाद एक तरफ जहां ममता सरकार ने दुष्कर्मियों को सजा देने के लिए विधानसभा में विधेयक पास कराया है। कॉलेज अस्पताल के पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष पर अस्पताल में गैर कानूनी तरीके से कई तरह के कार्य संचालित किए जाने के आरोप लगे हैं। संदीप से लंबी पूछताछ के बाद सीबीआई ने उन्हें बसावट के आरोप में गिरफ्तार कर लिया है। अब गिरफ्तारी के बाद संदीप सुप्रीम कोर्ट पहुंचे हैं। सुप्रीम कोर्ट संदीप घोष की अर्जी पर 6 सितंबर को सुनवाई करेगा। मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच शुक्रवार को इस मामले की सुनवाई करेगी।

...तब मेरा पक्ष नहीं सुना गया

संदीप ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है और कहा है कि कलकत्ता हाई कोर्ट ने उनके खिलाफ करप्शन केस में सीबीआई की जांच का आदेश देते समय उनके पक्ष को नहीं सुना। संदीप ने इस मामले के खूब को पक्षकार बनाने की अर्जी हाई कोर्ट में दायर की थी, जिसे हाई कोर्ट ने खारिज कर दिया था। इसके अलावा संदीप ने करप्शन के आरोपों को हाईकोर्ट परिसर में हुई रेप की घटना के साथ जोड़े जाने से जुड़ी हाई कोर्ट के टिप्पणियों को भी हटाने की मांग की है।

राज्य में 28 हजार से भी ज्यादा दुष्कर्म और हत्या के मामले लंबित

अपराजिता महिला एवं बाल विधेयक 2024 का उद्देश्य बलात्कार और यौन अपराधों से संबंधित गए प्रारंभिक के जरीए महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा मजबूत करना है। पश्चिम बंगाल के बारे में मई 2021 की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि 28 हजार से भी ज्यादा दुष्कर्म और हत्या के मामले लंबित हैं।

राजस्थान पुलिस अधीनस्थ सेवा 1989 में संशोधन

महिलाओं को पुलिस भर्ती में मिलेगा 33 % आरक्षण

एजेसी जयपुर



राजस्थान सरकार ने बुधवार को कैबिनेट की बैठक में कुछ अहम फैसले लिए, जिनमें पुलिस विभाग में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण दिए जाने का फैसला मुख्य तौर पर शामिल है। इसके लिए राजस्थान पुलिस अधीनस्थ सेवा 1989 में संशोधन किया गया है।

सीएम शर्मा ने योजना की घोषणा कर दी थी, जिसे अब कैबिनेट द्वारा स्वीकृति मिल गई है। फैसले का उद्देश्य पुलिस बल में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाना और उन्हें अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करना है। सरकार का यह निर्णय राज्य में महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण के दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। कैबिनेट बैठक के बाद विधि मंत्री ने कहा कि इस निर्णय से पुलिस बल में लैंगिक समानता को बढ़ावा मिलेगा और महिलाओं के प्रति अपराधों में कमी आएगी। इस संशोधन के बाद राजस्थान पुलिस विभाग की आने वाली भर्तियों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा, जिससे उनकी संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि की उम्मीद है।

हरियाणा विधानसभा चुनाव

जजपा- आसपा ने जारी की पहली सूची, 19 के नाम तय

पंचकुला। हरियाणा विधानसभा चुनाव को देखते हुए जननायक जनता पार्टी और आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) ने प्रत्याशियों की पहली लिस्ट जारी कर दी है। इस सूची में 19 नामों को मंजूरी दी गई है। सूची में दुष्यंत चौटाला का नाम भी शामिल है। वे उच्चाना विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ेंगे, जबकि दिग्विजय चौटाला डबवाली सीट से चुनाव लड़ेंगे। विधानसभा चुनाव को देखते हुए चंद्रशेखर आजाद की आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) और जननायक जनता पार्टी ने गठबंधन किया था। 27 अगस्त को हरियाणा में विधानसभा चुनाव के लिए जननायक जनता पार्टी और चंद्रशेखर की पार्टी आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) के बीच गठबंधन हुआ था।

सज रहे गजाजन



कोलकाता। कोलकाता में गणेश चतुर्थी से पहले कारीगर गणेश की मिट्टी की मूर्तियों को अंतिम रूप देते हुए।

हिमाचल की सुखू सरकार ने लिया बड़ा फैसला

अब अयोग्य पूर्व विधायकों को नहीं मिलेगी पेंशन

एजेसी शिमला

वंचितों से होगी पिछली रकम की भी वसूली

हिमाचल प्रदेश में दल-बदल के कारण अयोग्य घोषित पूर्व विधायकों को पेंशन बंद होगी। पेंशन से वंचित पूर्व विधायकों से पिछली रकम की भी वसूली होगी। दल-बदल को हतोत्साहित करने के लिए बुधवार को हिमाचल विधानसभा में विधानसभा सदस्यों के भते और पेंशन विधेयक पास हुआ। सीएम सुखविंद सिंह सुखू ने यह विधेयक पेश किया। राज्यपाल से मंजूरी के बाद यह कानून का रूप ले लेगा। इसमें किसी बात के प्रतिफल होते हुए भी कोई व्यक्ति अधिनियम के अंतर्गत पेंशन का हकदार नहीं होगा, जबकि वह अयोग्य घोषित किया गया है।



इस महीने वेतन 5 और पेंशन 10 तारीख को मिलेगी सुखू ने सबन में कहा कि प्रदेश के कर्मचारियों को इस महीने वेतन 5 तथा पेंशन 10 सितंबर को दी जाएगी। वेतन तथा पेंशन को पहली तारीख की बजाय कमः 5 व 10 तारीख को दिए जाने का मुख्य कारण यह है कि हमारी सरकार खर्च का प्रारिथों के साथ मैपिंग करके वित्तीय संसाधनों का उपयोग विदेकपूर्ण तरीके से करना चाहती है, जो कि हमारी सरकार के कुशल वित्तीय प्रबंधन को दर्शाता है।

सीएम धामी भी सख्त

पूरी एसओजी टीम बर्खास्त 37 पुलिसवालों के तबादले



श्रद्धिकेश। उत्तरखंड के श्रद्धिकेश में अखिलेश यादव की खबर करने पहुंचे एक फंक्शनर पर शराब माफिया ने हमला करने के मामले में सीएम पुष्कर सिंह धामी ने चाबुक चलाया। पुलिस ने माफिया को भेज दिया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने संबंधित कोतवाली और एक थाने के 37 पुलिसकर्मियों के तबादले कर दिए। साथ ही एसओजी टीम को भंग करते हुए कुशावचन से संबद्ध कर दिया है।

सरकारी प्रक्रिया और डिजिटल परिवर्तन

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय को पोषण ट्रेकर में मिला राष्ट्रीय सम्मान

एजेसी नई दिल्ली



महिला एवं बाल विकास मंत्रालय को पोषण ट्रेकर पहल के लिए ई-गवर्नेंस 2024 का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। यह पुरस्कार सरकारी प्रक्रिया और डिजिटल परिवर्तन के लिए पोषण ट्रेकर पहल को दिया गया है।

पोषण ट्रेकर बच्चों को पोषण विकास की वास्तविक समय की निगरानी और मूल्यांकन के साथ बच्चों के लिए एक स्वस्थ भविष्य सुनिश्चित करता है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने बताया कि 6 वर्ष तक की आयु के बच्चों के स्वास्थ्य और कल्याण को सुनिश्चित करने की दिशा में अहम कदम उठाते हुए मिशन पोषण 2.0 ने अपनी मासिक विकास निगरानी पहल पोषण ट्रेकर के माध्यम से लाखों जीवन के विकास पर नजर रखने में बड़ी प्रगति की है। पोषण ट्रेकर कार्यक्रम ने विकास के मुद्दों को सफलतापूर्वक पहचान को है।